लीला सुधा सिन्धु
पद्य रामायण
: रचयिता :
श्रीमद् स्वामी रामहर्षणदास जी महाराज

॥ श्री सीतारामाभ्याँ नमः ॥

लीला सुधा सिन्धु

(पद्य रामायण)

* रचयिता *

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

वसंत पंचमी

(विक्रम सं २०६३)

लीला सुधा सिन्धु (पद्य रामायण)

रचयिता :

श्रीमद् स्वामी रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :
प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज,
परिक्रमा मार्ग,
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : (०५२७८) २३२३१७

तृतीय आवृत्ति : ११००
वसंत पंचमी
(विक्रम सं २०६३)

मूल्य : रु. १५० मात्र

टाइप सेटिंग एवं डिज़ाइन :
डी टी पी सेन्टर, सरस्वती सद्नम कॉम्पलेक्स,
धरमपेठ, नागपुर - ४४० ०१०
दूरभाष : (०७१२) २५६०९८९

अनुक्रमणिका

अनुक्रमांक	प्रसंग	पृष्ठ क्रमांक
२३	अवध में वन विहार	४१६
२४	सरयू तट क्रीड़ा	४२१
२५	नव दम्पति की फूल बंगला-झाँकियाँ	४२२
२६	अयोध्या में सरयू-जल विहार	४२६
२७	अयोध्या में गुरु पूर्णिमा	४३१
२८	अयोध्या में झूलनोत्सव	४३३
२९	बन विहार व शरद रास	४६२
३०	रासान्तर्गत युगल लीला	४७६
३१	अवध में विवाहोत्सव अभिनय	४८९
३२	अवध में फागुन-होरी	४९०
३३	अवध में युगल झाँकी	५०१
३४	वन लीला	५७८
३५	रण लीला प्रकरण	६६८
३६	राज लीला प्रकरण	७०६

******

(५५७)

अनुरागी सुनैनहि राम ने।
दै प्रबोध बहु भाँति प्रणमि पुनि, चले विदा लै भावने।
वर्षत वारि बही दृग धारा, जरत जरनि जिय जावने।
सियहिं गोद लै मातु बुझावति, नारि धर्म सुख छावने।
चूमि वदन बहु भाँति सिखय पुनि, कही बचन विरहावने।
अवध पुरी अब जाहु लाड़िली, छोड़ि मोहि प्रिय पावने।
अमा रैन मिथिला अँधियारी, कौशलपुर उजरावने।
हर्षण जननि सिया लपटानी, रोवहिं भान भुलावने।

(५५८)

हिचकि हिचकि प्रलपाति किशोरी।
भाभी भैया दाऊ भैया, कहि कहि रोवति विरह विभोरी।
नैहर त्याग नेक नहिं भावत, पुरजन परिजन नेह अथोरी।
खग मृग जीव जन्तु बहु प्यारे, भूरुह लता लखति बनि बौरी।
कहुँ अम्बहि कहुँ सिद्धिहिं लिपटति, वारि बहावति भरि दृग दोरी।
करुणा विरह समुद्र समायो, नृप-रनिवास भूलि भव छोरी।
हे सीते हे प्यारी वत्से, हे संजीवन मूरिहु मोरी।
हर्षण जियब कहहु कस होई, तिहरे बिना कहँहि सब गोरी।

(५५९)

चली सियहिं पहुँचावन री।
सिद्धि सुनैना तिय परिवारी, पुर नारी विरहावन री।

शची शारदा रमा भवानी, भूमि भली भल भावन री।
फिरि फिरि चितय सिया दृग ढारति, लगी झरी जनु सावन री।
पुनि पुनि मिलति वियोगहि पागी, मातु भाभि हिय लावन री।
कबहुँ सहेलिन भरि भुज भेंटति, करुणा सरित बढ़ावन री।
सबहिं मिली विरहातुर सीता, प्रेम पगी रस छावन री।
हर्षण हहरि हेरानो आपा, दुसह दशा किमि गावन री।

(५६०)

विरह पगी निरखति चहुँ ओर।
मातु महल पितु सदन सुखद अति, भ्रात भवन बनि विकल विभोर।
भूरुह लता वाटिका गृह के, पशु पक्षी लखि भरि दृग कोर।
कहति मौन मन देखिहौ कब अब, छूट रहे हा समय न जोर।
अश्रु प्रवाह भीजि तन सारी, गदगद कंठ प्रेम रस बोर।
हिचकि हिचकि फिरि चितवति पीछे, चरण चलत नहि अढुकि सुठौर।
अम्ब भाभि कहँ मिलति लिपटि पुनि, करुणा क्रन्दन मच्यो अथोर।
हर्षण गगन नारि सह देवहु, देखि दशा दृग वारि को छोर।

(५६१)

मिथिला करुणा कटकइ आई रे जरत नंगरिया आज।
विरह वह्नि वर्षत बहु वेगहिं, अश्रु घृतहिं दै बहुत बढाई रे।जरत।
आह भरी श्वासा की वायुहि, बड़े जोर झकझोर चलाई रे।
वचन वियोगित समिधा डारी, दशदिशि दाह कहे को गाई रे।
भागेव बचे न कोऊ लखियत, जड़ चेतन चतुरउ चिल्लाई रे।

हा सीते हा सीते सीते, भूमि आकाशहिं शोर सुनाई रे।
को हम कहाँ काह कहँ होवत, कोउ नहिं जानत जियहिं जराई रे।
हर्षण वज्र कठोर हृदय ते, गान करय कछु लाज न लाई रे।

(५६२)

आज व्याकुल अहैं शुक सारिका।
रटि रटि कहँहि कहाँ वैदेही, विरहाकुल जिय जारिका।
अश्रु बहाय बहे बिरहा सरि, मृग गण नेहहिं पारिका।
वृक्ष वेलि कुम्हलानि श्राव रस, विलग वेदना भारिका।
धरती भीगी लगत अशोभी, पुत्रि विरह दृग ढारिका।
लली गवन गृहहू की शोभा, फीक भई दृग दारिका।
जहँ अस दशा जड़न की लखियत, कौन कहे नर नारिका।
हर्षण सिद्धि सुनैना तलफहिं, मणि बिनु अहि दुख धारिका।

(५६३)

आज करुणा सरित सब नारियाँ।
बहि बहि बूड़ि गई मझधारी, कोउ नहिं कियो सम्हारिया।
विरह विकल श्री सिद्धि सुनैना, मुर्छि मही जित जारियाँ।
सुधि बुधि भूल गई तिय सारी, धीर हृदय नहिं धारियाँ।
पुत्रि नेह वसुधा धरि धीरज, चली सिया सँग प्यारियाँ।
सोउ गिरी रोवति नृप आँगन, भूली स्वतन विदारियाँ।
तैसहिं शारद शची रमोमा, बेसुध परी अगारियाँ।
हर्षण विरह विहाल त्रिलोकी, सबहीं सर्वस वारियाँ।

(५६४)

सिगरे ज्ञानी ज्ञान गमाये।
याज्ञवल्क श्री वसिष्ठ कौशिकहु, प्रेम वारि दृग छाये।
विरह वेदना बिदा समय की, ब्यापी सबहिं बुझाये।
दशरथ सहित बराती जन जन, नयनन नीर नहाये।
भरत लखन रिपुसूदन रामहु, सात्विक भाव समाये।
लाज सहाय करत पै दुलहौ, नाहिन बचे बचाये।
यथा योग सब भींग विरह सरि, जीव चराचर काये।
हर्षण हहरि हहरि भरि आहैं, पुरी वियोगिनि भाये।

(५६५)

लक्ष्मीनिधि सँग अनुजन आये।
सियहिं विलोकि धीर दिय छोरी, विहर पीर ते दुसह दबाये।
भ्रातहिं लखि कटि पकड़ि लली तहँ, भेंट करति रोवति हिचकाये।
अंक लिये मुख चूमि पोंछि दृग, रुदत बदत श्रीनिधि समुझाये।
पै कछु लग्यो उपाय न तहवाँ, स्वयं गिरे महि मुरछि भुलाये।
भैया भैया कहति लड़िली, छटपटाति मुख देखि दुखाये।
यागवलिक गुरु आय परशि तन, जनक सुवन कहँ द्रुतहिं जगाये।
ताही समय जनक सह भ्रातन, सिय समीप अति आतुर आये।

(५६६)

लीन्ह लाय उर जनक जानकी।
विरह विवश भरि नयनन नीरहि, मिटी महा मर्याद ज्ञान की।

चूमि वदन हा सिय सिय कहि के, तलफ मीन बिनु वारि पान की।
भूलि भान भुँइ गिरे भूमि पति, दशा देखि द्रुत प्राण हान की।
यागवल्क कौशिक समुझाये, सह वसिष्ट वर मंत्रि मान की।
जानि अनवसर धीरज धारे, कहत सिया सिय नेह न्हान की।
समय समुझि गुरु शासन दीन्हे, पहुँची बेला अब पयान की।
हर्षण मंगल शासन करि करि, देहिं विदा सब जाँय जानकी।

(५६७)

करुणा सरित सिन्धु ह्वै आज।
निमिपुर निमि परिवारहिं बोर्यो, तिय सह सकल समाज।
देखि दशा गुनि सुदिन सुमंगल, जनक सियहिं लै भ्राज।
रतन पालकी पुत्रि चढायो, सुमिरि शम्भु गणराज।
वर्षत सुमन देव जय बोलैं, व्योम दुंदुभी बाज।
शान्ति पाठ मुनियन उच्चारे, दशदिशि अनुपम छाज।
सुखद सगुन सब दिये दिखाई, पंच भूत सुख साज।
हर्षण विरह एक नहिं मान्यो, बाढ़त बोरि जहाज।

(५६८)

रोवति सियहिं बुझायो विविध विधि।
सास-श्वसुर-गुरु-भर्तृ-भाव भल, पतिव्रतधर्मसिखायोसबनसिधि।
लक्ष्मीनिधि तिहरे बड़ भैया, संग अनुज सब लायो नेह निधि।
अवधहिं अइहैं वेग लिवावन, हर्षण पुनि इत आयो प्रेम विधि।

(५६९)

जनक पालकी सुभग सजाई।
माण्डवि उर्मीला श्रुति कीरति, करि दुलार सिख देय चढ़ाई।
सखी सहचरी दासि दास बहु, सिय सुख हेतु विचार बढ़ाई।
हर्षण पुत्रि न ऊबै पर-पुर, दीन्हे सुखद साज बहुताई।

(५७०)

पुनि पुनि दाइज बहु विधि दीन।
प्रीति पगे भरि भाव अवधपति, सादर सबहीं लीन।
मागध सूत बन्दि गुण गायक, पाये धन धन हीन।
आशिष देहिं हर्ष चिरजीवैं, कौशलेश सुख सीन।

(५७१)

दशरथ चले समय शुभ जान।
सुमिरि शम्भु गिरिजा गण नायक, रंग नाथ कुल के भगवान।
बन्दी विरद वेद मुनि उचरत, बजत व्योम भुँइ विपुल निशान।
चले जनक पहुँचावन सुत सह, भ्रात सखा शुचि सचिव सयान।
पुनि पुनि चक्रवर्ति कह बहुरहिं, छोड़ि न जात नृपति विरहान।
बरबस रथहिं रोकि कह जावहिं, आये बहुत दूरि मतिवान।
भरि जल नयन मिले पद प्रणमी, जनक बहुत विधि विनय बखान।
हर्षण युगल भूप लखि मिलनी, वर्षत सुमन सुरहु सुख सान।

(५७२)

श्री मिथिलेश वशिष्ठहिं वन्दे।
तैसहिं कौशिकादि पद प्रणमी, आशिष वचनहिं पाय अनन्दे।
रावरि कृपा कृतारथ भयऊँ, करि वर विनय विगत दुख द्वन्दे।
हर्षण विरह विलोचन भरिकै, विदा किये श्री निमिकुल चन्दे।

(५७३)

लक्ष्मीनिधिहु विरह बिलखान।
चक्रवर्ति पद पर्‌यों भूलि तन, नयन नेह असुँआन।
भूप उठाय हृदय हठि लायो, सूँघि शीश मतिवान।
बहुत भाँति कुँअरहि समुझायो, चूमि कपोलन पान।
रामहिं प्राणहु ते प्रिय लालन, पायौं परम प्रमाण।
तैसहिं भरत लखन रिपुसूदन, जानहिं जिय को जान।
सहित अवध मोहिं अतिशय प्यारे, पंचम बालक भान।
हर्षण गुरु जन के मन भाये, आयो अवध त्वरान।

(५७४)

जनक सुवन पुनि रिषियन भेंटे।
करत प्रणाम देखि मुनि कौशिक, सह वशिष्ठ प्रभु प्रेम लपेटे।
हिय लगाय समुझाय पोंछि दृग, कीन प्यार कह वचन अमेटे।
हर्षण सत्य अहौ कुल भूषण, प्रेम मूर्ति श्री जनक के बेटे।

(५७५)

मिले जनक रघुकुल अवतंसम्।
योगिधेय परमार्थ स्वरूपं, मुनि महेश मन–मानस हंसम्।
बोले वचन विनय वर वेषं, जेहिं अन्वेषहि योगि विशेषम्।
नित्य एक रस अज अद्वैतं, निर्गुण सगुण परे हृदयेशम्।
नयन विषय सो सुभग स्वरूपं, कृत कृतार्थ भो लहि अखिलेशम्।
मोर भाग राउर गुण गानं, शारद शेष न वर्णि अशेषम्।
निज जन जानि दियो बहु मानं, तथा देहि प्रभु प्रेम प्रवेशम्।
हर्षण अविरल अकथ अनूपं, स्वार्थ रहित वैचित्र सु एषम्।

(५७६)

जनक मिले चारहु जामातन।
नयन नीर कंपत स्वर गदगद, सात्विक भाव न हृदय समातन।
पितु वशिष्ठ कौशिक सम समुझी, समुझाये रघुवर रस रातन।
प्रेम प्रपूर्ण हृदय हठि वसिहौं, आवन हर्ष कह्यो मृदु बातन।

(५७७)

जनक सुवन बहु विरहहिं पागे रे।
पुनिपुनिमिलतसकलबहनोइन, मणिबिनुफणि तिमि जीवन लागेरे।
सात्विक भाव उदय भे सिगरे, कहे वचन प्रभु ते अनुरागे रे।
शारदशशिशत सुखदसुआनन, अब नहिं लखबै अतिहिं अभागे रे।
अस कहि मुरछि गिरे महि माही, प्रलय दशा दिव देहहिं दागे रे।

राम अंक लै परसत पाणिहिं, लक्ष्मीनिधि तउ तहँ नहिं जागे रे।
सखे श्याम हा राम सिया कहि, कहुँ कहुँ स्वासा आवत आगे रे।
हर्षण हृदय सनेह की सरिता, बूड़ि गये नृप-कुँअर न बागे रे।

(५७८)

रामहि जनक बुझाय कहे।
आप अवध गवनहिं प्रिय प्यारे, पिता प्रतीक्षा करत अहें।
रथहिं चढ़ाय कुँअर कहँ भेजत, अबहिं सुनैना जहाँ रहे।
कछुक काल आइय चेतनता, त्यागहिं सोच सुशान्ति गहें।
श्वसुर वचन सुनि कुँअर परशि के, चले सकुचि गुरु लाज लहे।
चलत राम सब चली बरातहु, सहित भूप मुनिराज महे।
बजे निशान पुष्प सुर वर्षे, जनक प्रीति की सरित बहे।
हर्षण धूर दिखानी जब लौ, मैथिल खड़े न चलन चहे।

(५७९)

रथ चढ़ाय कुअरहिं लै राजा।
आये भवन विरह के घाले, भाइन भृत्यन सहित समाजा।
जनक सुवन चौथे दिन जागे, फल रस लिये सेव के काजा।
तीन दिवस मिथिलापुर वासिहु, नहिं कछु लिये विरह विभ्राजा।
मणि बिनु फणि जिमि जल बिनु मछली, तलफत रहे रटत रघुराजा।
सिद्धि सुनैना श्रीनिधि-नृप की, कहै कथा किमि लागति लाजा।

भूमि विरह वश खाय दरारहिं, दिखै फटी बिनु कारण आजा।
हर्षण तहाँ दुखी नर नारी, जगत जियत जल विकल जहाजा।

(५८०)

योजन तीन बरात गई।
परशुराम मग मिले क्रुद्ध तनु, मनहु काल चह जगत खई।
दपटि दशरथहिं रामहिं बोले, तोरि पिनाक बन्यो विजई।
सारंग वैष्णव धनुहिं चढ़ायो, करौ समर यदि क्षत्र जई।
देत चाप आपुहि प्रभु पाणिंहिं, पहुँचि चढ़यो आश्चर्य भई।
भृगुवर तेज राम मुख प्रविशेउ, छोई भे मुनि महत मई।
जानि अमोघ बाण रघुनन्दन, जार्यो तिनके पुण्य चयी।
करि प्रणाम स्तुति करि भृगुपति, तप हित गवने भक्ति लई।

(५८१)

अवध निकट गइ पहुँचि बरात।
सरयू तीरे विपिन प्रमोदे, किये विश्राम वास सुखदात।
नरपति निज रनिवास पठायो, अन्त:पुरहि हृदय हर्षात।
आव बरात जान नर नारी, प्रेम पगे पुनि पुनि पुलकात।
दूलह दुलहिन दर्शन ललचत, आँख दसाये सुख न समात।
चौहट हाट बीथि चहुँ फेरहिं, गृह मन्दिर सब सजे सुहात।
बजत बाजने मंगल गावहिं, घर घर ध्वज पताक फहरात।
हर्षण विप्र वेद कवि बिरदहिं, वर्णत जहँ तहँ आनँद गात।

(५८२)

आज व्याहि के कुँअर सबै आई है बरतिया।
कुल गुरु आयसु दीने, पुरहीं प्रवेश कीने,
पुलकि पुलकि प्रेम पगै नृप-राई की सुछतिया॥
बाजा बहु विधि बाजै, सुर सब जय जय गाजै,
वर्षि वर्षि के सुमन लखै दुल्हा की सुगतिया॥
पुर के नर औ नारी, निरखै दूलह चारी,
आरती उतारहीं अहा प्रेम में सुमतिया॥
कलशा शिर में धारे, मंगल गीतहिं गा रे,
हर्ष हर्षि के निरखि सबै, दुल्ली की पलकिया॥

(५८३)

परिछन करति कौशिला आज हे माई।
सुभग सुमित्रा केकइ सँग में, अन्तः पुर अति राज। हे माई.।
लोक रीति श्रुति रीति निबाही, करी आरती साज। हे माई.।
चारहु दुलहा दुलहिन लखि लखि, प्रेम पगी भल भ्राज। हे माई.।
भूमि व्यौम उत्सव बहु माचो, गावहिं मंगल काज। हे माई.।
तोप तुपक घहरात घनी धुनि, बहु विधि बाजन बाज। हे माई.।
वर्षहिं सुमन बजावत दुंदुभि, जय जय सुर सब गाज। हे माई.।
हर्षण मुनि श्रुति कवि वद बिरदहिं, आनँद सकल समाज। हे माई.।

(५८४)

दुलहा दुलही उतारी पालकी।

पावड़–पद्म–पराग बिछाई, शंक चुभन पद ख्याल की।
ग्रन्थि जुरी लै चारहु जोरी, चली गयन्दी चाल की।
मातु मुदित हरदी हँथ छापा, द्वार दिवाती बाल की।
कृत्य करत सकुचत नृप वारे, शोभा मौर सुमाल की।
रती रमोमा शारद शचि सब, वेष बनाये जाल की।
तियन बीच मृदु मंगल गावहिं, प्रीति पगे ललि लाल की।
हर्षण हर्ष कहै को तिनको, धन्य सिया–ससुराल की।

(५८५)

देखु अली कैसे दुलही दुलहवा।
मन्द मन्द पग धरत हरत मन, जग जग ज्योति जगावन सोहवा।
सिय सौन्दर्य फूटि वर वसनन, दमकत दामिनि द्योति अगहवा।
यदपि ढक्यो घूँघट पट आनन, तउ शत चन्द्र किरण रस बहवा।
कोटि काम–रति रमा–नारायण, लाजत लखत मनहिं मन मोहवा।
इन सम येइ अहैं सत त्रिभुवन, सम अतिशय नहिं कोउ को जोहवा।
सुख सुषुमा श्रृँगार महोदधि, छबि की खानि अवधपुर छोहवा।
हर्षण धन्य भयी हम सिगरी, पियहिं अमिय रस दोउ दृग दोहवा।

(५८६)

सखी लखु रघुकुल की उजियारी।
राम रसिक की रसिकिनि दुलही, छहरति छटा अपारी।
भहर भहर भाषति अँगनाई, परम प्रकाश प्रसारी।

आनँदमय अभिरामी आभा, सुख सुषमा श्रृंगारी।
चुइ चुइ परति पुहुमि जनु सजनी, रसहिं बढ़ावन वारी।
मणि महलन मणि आंगन खंभन, पर प्रतिबिम्ब अटारी।
सो शोभा सुख किमि कहि जावै, बहत सुधा रस धारी।
हर्षण हर्षि पियहु दृग दोने, चिदानंद सुखकारी।

(५८७)

चारहु बनरा बनरी बिराजी।
रतन जड़ित सुखमय सिंहासन, छत्र चमर सिर लहरत आजी।
धूप दीप नैवेद वेद विधि, पाये दुलहा दुलहिन लाजी।
सकुचत कृत्य करत कछु लौकिक, जननि करी आरति शुभसाजी।
मंगल पढ़ी सकल तिय साथहिं, सुर नर मुनि कीजे जहँ भ्राजी।
पुनि तृण तोरी बलैया लीन्ही, दान विविधि तिय सुत सुख काजी।
सहित नारि विप्रन बहु पूजी, आशिष लहो भई मन राजी।
हर्षण अनँद अन्तःपुर को, वरणि न जावै कवि न समाजी।

(५८८)

सदा चिरजीवैं अहो पिय प्यारी।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, मिथिला औध बिहारी।
सुख स्वरूप सुख सिन्धु समाये, दम्पति प्रेम पुजारी।
गंग जमुन औ सरयू सरि की, जबलौं दीखै धारी।
जबलौं शेष धरैं महि शीशहिं, सूर्य चन्द्र उजियारी।

सिय अहिवात अचल रह तबलौं, सुख सोहाग रस वारी।
प्राण प्राण जिव जिव सब केरे, प्रिय दर्शन सुखकारी।
बने रहैं हर्षण हम देखहिं, विप्रन गिरा उचारी।

(५८९)

आनँद अति अतुरानि कौशिला, सिय मुख देखन चाह चये री।
देवि अरुन्धति आयसु पाई, घूँघट खोली नेह नये री।
शारद शशि शत आय अजिर जनु, शीतल सुखद प्रकाश कये री।
अमृत रस वर्षाय सुधाकर, आनँद अंबुधि बाढ़ दये री।
चमत्कार परिपूरण आभा, अनुपम अकथ अपार छये री।
निरखत प्रथम चषहु चकचौंधे, रूप जोति रवि रास जये री।
को हम कहाँ अपनपौ भूल्यो, प्रेम चिन्ह तन उदित भये री।
हर्षण धीर धरि नृप रानी, रूप रसहिं दृग द्रोण पये री।

(५९०)

मातु मन की को कहि सिराई।
लहि योगि दुर्लभ परम आनँद, भाग भलि निज मुखहिं गाई।
गिरिजा महेशहिं प्रणमि पुनि पुनि, कहति तिहरेहिं कृपा पाई।
श्रृंगार सुख सुषमा की रासी, घरहिं बनरी सिया आई।
कनक उज्वल कल कमल कोमल, चन्द्र वदनी रसहिं छाई।
मधुर मधुमय सौन्दर्य सागरि, लली लोनी जनक जाई।
सौकुमार सुठि सौरभ अनूपम, ललित लावण तनहिं लाई।
हर्षण रमोमा शची शारद, रति समेतहिं लजैं माई।

(५९१)

शत शशि सिय समता नहिं पाई।
मधुर मधुर प्यारो मुख मंडल, सुधा समुद्र सुहाई।
जननि विलोचन मीन किलोलत, आनँद अतिहिं अघाई।
प्रेम पगी दशरथ नृप रनियाँ, देखत गई बिकाई।
वदन विलोकन नेग देन हित, हियहिं विचार सोचाई।
अवधराज सम्पति शत ऐन्द्री, सो सब तुच्छ लखाई।
राम रूप को गर्व हृदय जो, त्यागेउ सास लजाई।
हर्षण दशा देखि सो सीता, सकुची शीश झुकाई।

(५९२)

जानि जननि को सोच सुहनमाँ।
अन्तर्यामी जनहित कारी, आय गये तहँ राम ललनवाँ।
मातु मनहिं उपजायो भावहिं, पाय गई सिय योग मोहनवाँ।
पुत्र पानि पुनि पकरि के सौंपी, लेहु लली निज नेग पमनमा।
सर्वस मोर प्राण को प्राणहु, तव अनुरूप मधुर सुख सनमा।
सुख स्वरूप सुख सिन्धु समाये, सुख वर्षत परिकर हित दनवा।
प्रीति पगे जीवहु बहु वर्षन, बने रहहु दोउ हृदय हरनमा।
अस कहि दीनी वसन विभूषण, अमित अमूल हर्ष मणि धनवा।

(५९३)

दीनी केकइ कनक महल को।
जनक लड़ैतिहिं बदन दिखाई, सब सुपास सब काल अटल को।

कनक भीति नव रत्न जड़े जहँ, सप्तावरण अनूप अमल को।
तैसहिं दियो सुमित्रा सर्वस, यथा योग रनिवास सुफल को।
देवि अरुन्धति दिव्य विभूषण, दीनी नित्य नवीन नवल को।
भाव भरी बहु भूपन प्रमदा, सेनप सचिव नारि हिय ललको।
रती रमोमा शची शारदा, ओरहु देव तिया दिल दलको।
हर्षण देखि सिया मुख सिगरी, दीन्ही वस्तु विमोहि कहल को।
दोहा- सासुन सह तिमि सब तिया, हृदय अधिक हर्षान।
तीनहु सिय भगिनिन दई, नेग सुखद अनुमान।

(५९४)

सुखमय रस की बोरी सही सुखदाई सिया।
देवि सुनैना आनँद वर्धनि, तिरहुत नृप की छोरी।
जाके धरत चरण या पुर की, शोभा भई अथोरी।
सुख समृद्धि सौगुण अधिकानी, छाई अमित अँजोरी।
हृदय हर्ष मन मोद कहै को, चेतन जड़हु विभोरी।
परमानन्दहु आनँद पायो, कहहुँ अधिक का गोरी।
बड़भागी कौशल नृप-रानी, देव प्रशंसत लोरी।
हर्षण दम्पति राम जानकी, सदा सुमंगल सोरी।

(५९५)

नृपति भरे भल भाव के।
ऋषि मुनि संत सुरन कहँ पूजे, अशन शयन सुख चाव के।
दान मान वर विनय शील ते, संतोषे परि पाव के।

कुलगुरु–नेग सबहिं विधि दीन्हे, हृदय अधिक हरषाव के।
अन्तःवास दिये कौशिक कहँ, सेवहि तिय रुख राव के।
मागध सूत बन्दि गुण गायक, और बजनिहा गाव के।
याचक पाये द्रव्य मनहिं भर, देहि अशीष उछाव के।
हर्षण पुर की नारी सुआसिन, लह पहिनाव अघाव के।

(५९६)

आज सिया सुख दैया हो हमारी प्यारी।
परुसति व्यंजन विविध भाँति के, सिखवति कौशिल मैया।हो.।
चक्रवर्ति परिवार साथ लै, जेवन बैठ जेमैया।हो.।
परुसब नेग सिया को समुझत, शोच सने नृप रैया।हो.।
जानकि जोग कछुक नहिं पायो, शक्र शती विभुतैया।हो.।
जल सम्भूत जनक मणि दीने, दाइज महँ छबि छैया।हो.।
सोइ दिये अनुपम जग एकी, लाड़िलि लहि मुसुकैया।हो.।
समुझि नेग हित हमरे हर्षण, अवध न नृप कछु पैया।हो.।

(५९७)

सुदिन सोधि कल कंकण छोरे।
लोक वेद कुल रीत कीन सब, आनँद विभव विभोरे।
उत्सव महा अवधपुर छायो, जन जन रस में बोरे।
हर्षण पुष्प वरषि सुर पेखत, सुख के सिन्धु हिलोरे।

(५९८)

बजत बधाये सुख वर्षाये कुशला सुख साना हो।
ब्याह के आये सीतहि लाये, रघुवर प्रिय प्राना हो।
नित नव मंगल का पुर जंगल, चिद औ जड़ जाना हो।
हर्षण हर्षी जन जिय कर्षी, दम्पति रस खाना हो।

(५९९)

नित्य अवधपुर बजत बधावा लखो री आली।
जब ते ब्याहि राम गृह आये, सिय पद पर्‌यो प्रभावा।
मंगल मोद मगन नर नारी, अहनिशि निमिष बितावा।
सुकृत मेघ वर्षहि सुख वारी, जीव शालि सरसावा।
मातु पिता लखि पूत पतोहू, परमानँद रस छावा।
पुर के पुरुष तियन की भीरहू, लगी रहै भल भावा।
ब्रह्मानन्द सौगुनो सुख लहि, पेखहिं प्रभु पुलकावा।
हर्षण समय समय सुर आई, नयनन को फल पावा।

(६००)

कौशिक प्रीति पगे रघुबीर के।
छाय रहे अवधहिं सुख साने, भले भाव मतिधीर के।
चहत चलन कोउ जान न देवत, कहे वचन मुनि मीर के।
निरखन राम बहुरि इत अइहैं, विरह विवश हिय हीर के।
संमति पाय चले ऋषि राई, राम भरे दृग नीर के।

सह पितु अनुज गुरुहिं पहुँचावन, चले कसक हिय पीर के।
पुनि पुनि कहि लौटन मुनि फेरे, सूँघ शीश सुख सीर के।
करि प्रणाम बहुरे भरि विरहहिं, हर्ष वरण यश थीर के।

(६०१)

कनक महल सखि शयन निकुंजे।
सखी सहेली सहचरि अलियाँ, और मञ्जरी रानि को पुञ्जे।
षट प्रकार मैथिल सुकुमारी, रस रूपी रस दानि अभुँजे।
सेवहिं सीता राम यथा रुचि, नृत्य वाद्य हर्षण गुणगुंजे।

(६०२)

सखि सौभाग्य रजनी आज लाड़िली मनाये री।
योग लग्न ग्रह वार तिथी शुभ,
रती रमोमा लाज मैथिली सुहाये री।
शयन कुंज शयनासन राजी,
प्रथम मिलन रसराज राम को रमाये री।
स्वयं सुखद श्यामहिं सब वारी,
तन मन तिन सुख साज लाल में लुभाये री।
रस की धार युगल मिलि एकी,
रसाद्वैत भल भ्राज भान को भुलाये री।
अकथ अगम रस सिन्धु सुखदतम,
परिकर सहित समाज आप में समाये री।

अनुपम आनँद सिया रमण को,
राम रमण सिय काज आत्म में अघाये री।
हृदय हर्ष अलिगण गुण गावै,
यंत्र बहुत विधि बाज प्रीति को चुआये री।

(६०३)

पलका पै सुखधाम सँवलिया शोभा सुषमा चुइ चोई रे।
छिटकि रही छहरति चहुँ ओरिया, आनँदमय भल भुंइ भूंई रे।
रस रूपी रघुराज रमइया, सीतापति सुन्दर सुख दइया,
कोटि मनोज विमोह लोभइया, शशिशत आनन होइ होई रे।
नयन नुकीले अति अनियारे, बड़रे कजरे कल रतनारे,
चितवनि चतुरन चित्त चोरैया, चलत रहत मधु मोइ मोई रे।
मधुर मधुर मुसकानि मोहनी, अधर शोणिमा सुभग सोहनी,
मनहु अमिय की भरी दोहनिया, देति रहति रस जोइ जोई रे।
श्रवण सुभग कुंडल कल कानन, हलकि कपोलनि छबि छहरावन,
मनहु रसाम्बुधि युगल मछलिया, करत किलोलहिं ओइ ओई रे।
लहरति लेति अधर रस गोती, बड़भागिनि सुन्दर नक मोती,
चन्दन चर्चित भाल अलकिया, अरु शिर पेंचियां सोइ सोई रे।
नव नव सुठि सौंदर्य माधुरी, सौकुमार्य सौगन्ध लाध री,
बैठे मन मोहत हिय हरिया, हेरै हर्षण कोइ कोई रे।

(६०४)

(श्री) अँग अँग चर्चित चन्दना रे।
मधुरे मुसकति मुधरस वरषति, चन्द्रप्रभा चन्द्रानना रे।

करि वर गामिनि सत सुख धामिनि, मधुर मधुर मधु अंगना रे।
रुन्न झुन रुन्न झुनि पायल करि धुनि, कंकण किंकिण कंगना रे।
पद्म सुगंधित तन अभिनन्दित, परस वायु दिग नन्दना रे।
रसमय रसिकिनि रसदा सुख सनि, प्राण प्रिया रघुनंदना रे।
मन महँ ललकति हिय महँ हुलसति, पहुँची जहँ सुख कन्दना रे।
हर्षण नूपुर स्वर सुनि धी धुर, भे विभोर स्वछन्दना रे।

(६०५)

पहुँचि प्रणाम कियो सुकुमारी।
कहि न जाय सुख सुषमा शोभा, ललकत मिले जबहिं पिय प्यारी।
आनँद मगन भूलि दोउ आपा, प्रेम पगे मधुरे मधुवारी।
हिय ते हिय गर ते मिलि गरवा, भुज के पास बँधे सुख सारी।
कल कपोल दोउ के सटि सोहे, झरि झरि चुअति अमिय रसधारी।
प्राण प्राण अरु आतम आतम, मनचित बुद्धि भये एक कारी।
युगल सिन्धु रस के उमड़ाने, मिले परस्पर दृग के तारी।
हर्षण कछुक काल धरि धीरज, एकहिं एक चितय हिय हारी।

(६०६)

आरति प्रीतम प्यारे की, जीवन धन सुख सारे की।
करति मैथिली भाव भरी भल, प्रेम पगी गुनि भाग प्रबल फल,
अपने अँखियन तारे की।
अंग अंग अभिराम अतिहिं लखि, चहति परस रत चक्षुहिं में चखि,
हृदय रमण हिय हारे की।

रामहु रसे लखत सिय शोभा, आत्मरमण रमि रहे प्रलोभा,
सर्वस सिय पर वारे की।
करत प्रणाम प्राण प्रिय बामा, हर्ष अंक लिय सुखप्रद श्यामा,
रसिया राज कुमारे की।

(६०७)

श्यामा श्याम रसहिं रस रसिया पिये दृग दोनवां।
कहँहिं रसो वै स: जेहिं श्रुतियाँ, सो सिय राम लसै मन बसिया।
शयन निकुंज पगे पिय प्यारी, भाव विभाव मधुर मधु लसिया।
मधुर तकनि बतरावनि मधुरी, मिलनि मधुर हिय हरणि सुहँसिया।
आत्म अहं बुधि मन चित इन्द्रिय, प्राण देह सब रसमय जसिया।
रसमय कुंज रसहिं मय पलँगा, अरु उपवर्हन रसमय दसिया।
सच्चिद आनंदमय रसि राजे, बने एक इक प्यार पिपसिया।
हर्षण बुद्धि वाक् मन पारहिं, को जानै वरणै को कसिया।

(६०८)

माच्यो महलहिं धूम धाम, महली माते झूम झाम।
सखिगण रंग रँगी अलबेली, पिय प्यारी की प्रीति पुतेली,
रती रमोमा लजवन वारी, उत्सव कीन्ही आठ याम।
नाचहिं गावहिं भान भुलाई, भाव भंगिमा कहै को गाई,
वीणा वेणु वाद्य झनकारी, बाजै नूपुर छूम छाम।
रजनी रंजनि सिय-पिय सेवी, शोभी सुखद कहै को भेवी,
युगल किशोर काज हित अनुपम, राजी रसमय गौर श्याम।

आनँद आनँद आनँद एका, भूल्यो मै तै वृहद विवेका,
कनक बिहारी और बिहारिणि, जीवैं युग युग हर्ष काम।

(६०९)

प्राण पियारी नयन पुतरिया हमारी हो।
सेवति सियहिं कौशिला अहनिशि, अंक बिठाय के करति दुलरिया।
दीप वाति नहिं टारनि देवति, सुठि सुकुमारि जानि जियरिया।
पलँग पीठ अरु बैठि हिंडोरहिं, चलहु न भूमि कहैं महतरिया।
समय सुधा सम भोग पवावति, स्वयं स्वपाणि सुखहिं सुख सरिया।
सिय सुख जानि स्वसुख नृप रानी, तेहिं की चाह स्वचाह जबरिया।
तैसहिं चक्रवर्ति बहु प्यारत, रामहु ते बढ़ श्री जनक कुमरिया।
हर्षण सास श्वसुर की प्रीती, लखति जानकी प्रेम पुजरिया।

(६१०)

भरत लखन अरु रिपुहन लाल की।
प्रीति परम सिय चरण में लागी, जिमि मधु मधुप रसाल की।
मन क्रम वचन मातु निज मानी, बाढ़ी भक्ति विशाल की।
समय समय पद प्रणमि भाव भरि, होवत मनहिं निहाल की।
जनक लली की कृपा बिलोकनि, जानि जियहिं त्रय काल की।
सुखी रहत निशिवासर तीनहुँ, भूले भवहिं कुजाल की।
सहज स्वरूप गिने सिय सेवा, आयसु सब विधि पाल की।
हर्षण हेरि हृद्रय भल भावहिं, छोड़हु चतुरी चाल की।

(६११)

प्रीति पगे सिय के मन मोहन।

प्राणप्राणजिय की जिय जानत, ता सुख सुखहिं समुझि जिय जोहन।
प्रिया चाह आपनि कर मानी, चेष्टित रहत सने बहु छोहन।
विनय शील सौंदर्य सिया को, सदाचार सदगुण सुख दोहन।
सौकुमार्य माधुर्य ललित पन, लावणता सौष्ठव सुठि सोहन।
चलनि मिलनि ताकनि बतरावनि, लखि लखि वशी रहतबिनु कोहन।
जानकि जीवन जान जानकिहि, जीवन मूरि सुधा रस ओहन।
हर्षण नयन पलक सम राखत, पूजत प्रेम पुष्प स्त्रग पोहन।

(६१२)

सीता सजीवन मूरी सबै की।

अपने रहनि स्वभाव सुखद तम, जन जन जिय की कूरी। सबै की।
सास श्वसुर गुरु-पिय प्रभु देवर, प्रेम प्रसारे भूरी । सबै की।
प्राण-प्राण जिव की जिव जानै, सुख सुख हर्ष बिसूरी। सबै की।

(६१३)

सास श्वसुर गुरु भावनी बड़ी बेटी जनक की।

सेवा करन सदा मन राखति, भाव भरी सुख छावनी। बड़ी।
पति रुख चेष्टित रहति अहर्निशि, शाश्वत सुख सरसावनी । बड़ी।
भगिनि सखिन शुचि दासी दासन, कृपा अमिय वरषावनी। बड़ी।
जेहि विधि सुखी रहहिं सब देवर, सोइ संयोग मिलावनी। बड़ी।

पुर परिवार नारि गण जेती, सिय के नहे नहावनी। बड़ी।
छद्म वेष कहुँ सुरतिय आवहिं, लहहिं सोउ सुख पावनी। बड़ी।
रिधि सिधि संपति नदी अवध बहि, हर्षण हिय हुलसावनी। बड़ी।

(६१४)

आनँद धाम सिया आनन्दी।
आनंदमय श्रीराम रसिक वर, पाई पति स्वच्छन्दी।
आनँदमय सब सास श्वसुर गुरु, देवर सखि सुख कन्दी।
नैहर सुरति तऊ हिय आनति, हर्ष विरह वश मन्दी।

(६१५)

मातु पिता भल भाभी भैया (की) मुरतिया मन में बसी।
करि करि सुरति विरह वश होवति, नयन नीर छबि छैया। मुरतिया।
चरित चन्द्र नैहर के उगि उगि, हृदय गगन गुण गैया। मुरतिया।
खेलब खाब सखिन सँग हिलि मिलि, जननि जनक दुलरैया। मुरतिया।
भावज भ्रात को प्यार बहुत विधि, कथा कहानी सुनैया। मुरतिया।
पशु खग मृग जड़ चेतन मैथिल, सुधि सब भान भुलैया। मुरतिया।
सास श्वसुर सखिगण समुझावहिं, अइहैं अबहिं बोलैया। मुरतिया।
लहि इकान्त हर्षण रघुनन्दन, देत बोध नहिं ऐया। मुरतिया।

(६१६)

प्रीति निबाहन वारे, अहो रघुनन्दन रसिया।
मैथिल प्रेम पगे निशिवासर, बने मधुर मतवारे,
सुरति सुख कन्दन खसिया॥

सास श्वसुर सरहज शुचि श्याला, ध्यान सदा उर धारे,
लखो जग वन्दन असिया॥
विरह विभोर कबहुँ होइ राजत, श्रीनिधि प्रेम पसारे,
नेह नव फन्दन फँसिया॥
तिरहुत ते कोउ आव बटोही, कुशल प्रश्न अनुसारे,
पूँछि चित चन्दन जसिया॥
प्यारी ते कहुँ कर प्रिय बातै, श्वसुर पुरी सब वारे,
भले विधि द्वन्दन नसिया॥
प्रेम सरोवर पैठि निमज्जहिं, भूलि भान दोउ प्यारे,
परम स्वछन्दन लसिया॥
हर्षण तदाकार बनि विह्वल, बात करत हिय हारें,
वायु स्पन्दन तसिया॥

(६१७)

मैथिल प्रेम पगे अवध वासी।
गुरु वशिष्ट कौशलपति मंत्री, भरत लखन रिपुसूदन रासी।
नृप रनिवास सहित पुर नारी, वैष्णव साधु और सन्यासी॥
जे जे गये बरातहिं निमिपुर, जो नहिं गये रहे गृह पासी॥
सो सब मिथिला प्रेम प्रभावित, करत बात सुख सिन्धु समासी॥
लक्ष्मीनिधि मुख देखन चाहत, अइहैं कब इत भगिनि सकासी॥
जनक विभूति भाग भल वर्णत, ज्ञान विराग सहज सुख ग्रासी॥
हर्षण युगल पुरी सम्बन्धहिं, सबहिं अमिय सम अहनिशि आसी॥

(६१८)

बनी विरहनी जनक पुरी।

खाब पियब सोउब नहिं भावत, राम सिया संग प्रीति जुरी।

जनित वियोग शोक हिय हूलत, निमिष कल्प सम जात मुरी।

हर्षण चर्चा करहि नारि नर, दरश लालसा हृदय ढुरी।

(६१९)

लै के दिलदार सखी सो अवधहि चलो गयो चित चोर।

मुसकनि मधुमय डारि मोहनी, मधुर मधुर बतरानि सोहनी,

मोहेउ मो कहँ काह कहौं री मधुर मधुर बरजोर।

अधर अहै की अमृत उद्गम, पियत मिटत जग जनम मरण भ्रम,

लोनी लाली बिम्ब लजावनि ललित ललित रस बोर।

हाय हमहिं ललकाय पियरवा, बुन्द न दीन्हेउ अमिय अधरवा,

सिगरो सत सुख नक मुक्तहिं को, हुलसि दियो छल छोर।

बड़भागिनि सो निशिदिन चूसति, रस में रसी हलकि हिय हुलसति,

भली भाँति ते भजन भावना, अमित कियो तप घोर।

विरह वेदना लिखी ललाटहि, जोहत निशिदिन वाहि के वाटहिं,

रोवत रैन बितावें हमहूँ, अहनिशि रहहिं विभोर।

नयन अतिथि प्रिय प्राण के प्यारे, जीवन जीव सुखन सुख सारे,

हाय आय कब दैहै दरशन जनक पुरी के खोर।

हर्षण लोचन ललकि ललकि के, प्रीति पगे रस छलकि छलकि के,

लखि हैं रामहिं सहित सिया के आइ आइ नृप पौर।

(६२०)

विरह की मारी बेहलियिा कहो कहँ जाऊँ री।
काह करौं को कहौं काहि पै, को जानै जिय जलिया।
देखे बिन मोहिं कल नहिं आवै, नयनन नीर नवेलिया।
दिन नहिं चैन रैन नहिं नींदा, अंग शिथिल सब कलिया।
राग रँग कछु मनहिं न भावै, बाग बावली गलियाँ।
मैं तै मोर गयो सुनु सजनी, एक सिय वर सब थलिया।
देखे बिनु जिय जरनि न जावै, पिय प्यारी दुख-दलिया।
हर्षण हृदय हेरिहौं हारी, तेहि बिन जियब न भलिया।

(६२१)

हूलति पीर हियरवा सुनौं सखि मोरिया।
सीता रमण राम रसिकेश्वर, गवने अवध शहरवा।
बिरह बिहाल कलेजा कसकत, कैसे जिये जियरवा।
अँखिया आकुल चहैं दरश को, वरषैं जनु जल धरवा।
तेहि ते तासु चरित संजीवनि, देइ जिआवहु धरवा।
जेहि ते लखौ कबहुँ जो आवहि, प्रीतम प्राण पियरवा।
बनि कृतज्ञ तिहरौ हौं आली, झरिहौं सियवर तरवा।
हर्षण नतु पीछे पछितैहौ, करि हौ कहौ न सर वा।

(६२२)

नयन बाण मोहिं बींधो बिहारी।
चलो गयो बेदर्द सियहिं लै, कौशलपुरी पुरिन उजियारी।

नील मणी सम वारिज-वारिद, सुन्दर श्यामल वपु सुख सारी।
देखे बिना दृगन दुख दूनो, ज्योति गई छाई अँधियारी।
तपति रहहिं विरहानल ता के, यदपि श्रवैं निशिदिन जलधारी।
कबहुँ सखी सुख पइहैं नयना, निरखत नव नव अवध बिहारी।
विधि ते विनय करौ सब सजनी, अवशि सुनै सो गऊ गोहारी।
हर्षण प्रेरि श्याम इत लावै, पूजै प्रणय पुष्प दृग वारी।

(६२३)

कब देखिहै अलि वो नयना रसीले।
बड़रे कजरे अति अनियारे, चितवनि चित्त चोरावै नुकीले।
जादू जगे जौंहरी जालिम, जुलुम करै जो जन पै हठीले।
गजब गुणन के गेह गहन तम, अजब अनोखे अतिशय लजीले।
अमिय हलाहल मद ते पूरे, देवहिं जीवन मरणउ मदीले।
श्याम श्वेत रतनार लगत अस, मनहु त्रिवेणी रसमय रँगीले।
गरूअ गँभीर कृपा कल कोरन, चतुर चोर औ चंचल छबीले।
हर्षण हेरि हरेउ हिय हमरा, हाय हँसहि री हमरे वसीले।

(६२४)

मोहनि मूरति मन को मोहे मोर मन भावना।
मन को लै कै तन को तजि कै, गयो सिया को लै सँग सोहे, मोर.।
विरहहिं बसिकै रामहिं रसिकै, जीवै जगती कहु धौं को है।
अहनिशि रोऊँ सर्वस खोऊँ, ध्यान धरौ हा विकल विछोहे।
मन की बाता जान विधाता, इहै परम सुख सत सत मोहे।

विहरहु प्यारे अवध मँझारे, सुखहिं सुनै सुख सब दिन जोहे।
सुख को परशी हिय में हर्षी, लली लाल अनुपम रस दोहै।
बनी वियोगिनि हर्षण ढोंगिन, अबहिं जिए जग महँ बिन तोहे।

(६२५)

सखी री अवध अहै बड़भागी।
युगल किशोर किशोरी झाँकी, निरखि नयन अनुरागी।
प्रीति पगे कैंकर्य निरत मन, जिए सदा तिन लागी।
परमानन्द पाय परमारथ, मन क्रम वच बैरागी।
हम सब लाल लली विरहीने, बितवत रैनहिं जागी।
अबला अबल कहौ का कीजै, दूर देश पिय पागी।
करि सुधि कबहुँ आय इत प्यारे, दै है दरशन रागी।
हर्षण हृदय हहरि नहिं फाटत, सहत दुःख विरहागी।

(६२६)

कैसे है है अवध उजियरवा हो हमारी आली।
दूलह राम सिया शुचि दुलही, सुख स्वरूप हिय हरवा। हो हमारी।
आनँद मगन भूलि का जै है, सास श्वसुर सारी सरवा। हो हमारी।
सिद्धि कुँअरि को प्रेम प्रबल तम, निबही नेह अगरवा। हो हमारी।
खबर मिली नहिं एकौ तिनकी, जब ते गये कुँअरवा। हो हमारी।
युगल किशोर रहहि सुख साने, साँची साध जियरवा। हो हमारी।
विरह वह्नि बचिहै जो लोचन, लखि है लाल के तरवा। हो हमारी।
नतरु देह बुद्धी मन आतम, मिलिहै जाय पियरवा। हो हमारी।

(६२७)

सखी कोइ कहै न तिनकी बात।
राजदूत जे आवत जावत, खबर लेन सुखदात।
याचक पथिक बड़े व्यापारी, रिषि मुनि साधु जमात।
गवना गमन विराम दिये का, नाहिं कहैं कुशलात।
सियहिं लेन पठये नहिं नरपति, लक्ष्मीनिधि सँग भ्रात।
दिन बिन भूख कटै नहिं राती, नयन न नींद दिखात।
काह करौ सखि सूझ न आवै, बावलि सी जग जात।
हर्षण कबहुँ लाल ललि लखि है, लोचन ललित ललात।

(६२८)

मारे विरहा बेदर्दी हमहिं आली।
राम सिया की सुरति कटारी, काटै अँग अँग हमरो कुचाली।
चरित चन्द्र हिय गगन उगाई, विरहिन को जिय जार बवाली।
केहि ते कहौ कौन दुख दाबै, बिना श्याम सुखकर मणि माली।
भई बेकार गई मम दुनिया, फिरति बावली घाव की घाली।
छन छन जात कल्प सम अब तो, दुसह पीर ते बनी बेहाली।
रात नींद दिन भूख न लागै, उठि उठि कसक करे जेहिं शाली।
हर्षण मरण दशा दिखरावै, जीवौं तो लखौं लला लाली।

(६२९)

फूटि रहे अब नयन हमारे।
वर्षत रहत वारि निशिवासर, विरह मेह कारे कारे।

सुझ गई कोउ देखि परै ना, श्यामहि श्याम समा रे।
हर्षण होनी होय सो होवै, तजौं न प्राण पियारे।

(६३०)

अब धौं कब वे अइहैं आली।
प्राणन प्राण राम रघुनन्दन, सहित सिया सुन्दर सुख शाली।
मिथिला महल विहरि सुख दै कै, करिहै पुर नर नारि निहाली।
निजी सेव रखि के मन मोहन, हरि है हर्षण पीर विशाली।

(६३१)

लली लाल के विरह तरंगिनि सिद्धि कुँअरि सह श्री निधि बहि गे।
पार लगावन हार मिल्यो नहिं केवट नाव बिठावै गहि के।
बूड़ि जात उतरात कबहुँ पुनि गहरो लेत उसासे।
राम राम सिय राम रटत मुख अश्रु बहत बहु दरशन चहि के।
विरह घूँट ते गल घुट घुट है, मानहु प्राण निकासे।
तलफ तलफ चित चिंतन करि के, चितवत चष तोरहिं बहि बहि के।
रूपावर्त परत सूधि भूलत, विकल विदेह विकासे।
हर्षण पीर सोइ कर अनुभव, बहे जे यहि सरि देहहिं दहि के।

(६३२)

कहो कैसे जियब अब जग माहीं।
आवन कहे लाल द्रुत मिथिला, अबलौं दरशन पाहीं।
नयन दसाये मग को निरखहिं, दिवस गये पछिताहीं।

रैन कटे नहिं काटे कैसेहु, रोय रोय बिलखाहीं।
सास श्वसुर कुल की मरयादहु, भाग गई भय नाहीं।
राग रंग कछु नीक न लागे, जग चर्चा जिव दाही।
भूख प्यास सखि बिसरि गई है, ऐसेइ जीवन जाही।
हर्षण हरि की लगन अनूठी, सर्वस खोवनि आही।

(६३३)

श्री निधि सिद्धि कुँअरि ते कहत भये।
कहे सुने कछु पीर विरह की, जेहि ते घटै न बाढ़ नये।
कहा कहौं सूझैं नहिं प्यारी, जब ते सिय वर अवध गये।
कबहुँ लगत इतही रघुनन्दन, मोहि ते करत विनोद चये।
लोचन ललित लखौ ललि लालहिं, कबहुँ काज की कृत्य कये।
कबहुँ विरह की वह्नि जरत जिय, देखति दशा तुमहु नित ये।
कवन उपाय राम सिय निरखहुँ, तात न लेन सियहिं पठये।
हर्षण धीर धरत नहिं हियरा, व्याधि विवश तन ज्वाब दये।

(६३४)

प्यारे मोरे सुनहु हृदय की बतिया।
झूलत रहत नयन सिय रघुवर, प्रीति पगे रस मतिया।
लोचन तऊ लखन को ललकत, वस्त्र वारि दिन रतिया।
श्रवण शब्द त्वक परश जीह रस, घ्राण गंध सत सतिया।
लहत रहत नित नित करि अनुभव, लली लाल के गतिया।
तेहि पै तरसि रहीं ज्ञानेन्द्रिय, आतुर अतिहिं ललनिया।

समुझि न जाय दशा विरहीनी, कहति सिद्धि हिय हतिया।
मुरछि परी महि श्रीनिधि लीन्हे, हर्षण अपने छतिया।

(६३५)

रोइ कहें कहाँ जाउ कहो री, विरह के बोझ दबाउँ गहो री।
रागानुगा नदी चह पैरो, बूड़ि गये अकुलाउँ अहो री।
राम रूप की अग्नि प्रबल तम, ज्ञानिन के गति ज्ञान दहो री।
सहज बिरागी निमिपुर वासी, है चकोर रघुनन्द चहो री।
नयन विषय करि रमत वाहि में, भव सुख सब बिसराय लहो री।
बरबस ब्रह्मानन्द बिलानेउ, परमानन्दहि पाय बहो री।
यत्न करोर करै किन कोऊ, जाय न हिय को हीर रहो री।
हर्षण प्रीति के पाले परि कै, श्री निधि प्रलपत पीर सहो री।

(६३६)

सिद्धि कुँअरि अरु मिथिलेश कुँअर की।
सीय राम पद प्रीति विलक्षण, कहा कहे कवि भक्त प्रवर की।
भीतर बाहर परम प्रकाशी, लखत लोग छवि दिव दिनकर की।
श्रवत रहत नयना निशिवासर, श्रावण शोभा जनु जलधर की।
करत कार्य कैंकर्य समुझि मन, पितु आज्ञा सिर धारि-सुघर की।
दंपति कहत सुनत प्रभु चरितहिं, होत विभोर विरह मनहर की।
करत प्रतीक्षा नित्य रजायसु, अवध जान कब होहि विज्वर की।
हर्षण हृदय हरे हरि बरबस, देह वियोगिनि हहरि हहर की।

(६३७)

जनक सुनैना विरह विभोरी।
काटत दिवस वसत पुर मिथिला, सीता रमण राग रस बोरी।
कहत और कहि जात अन्य कछु, लखत और लख आनहिं कोरी।
सुनत अन्य सुनि जात और ही, परसत और परश कछु औरी।
करत और करि जात अन्य कृत, कहि न जाति सो दशा वरोरी।
तन मन रोम रोम रम रामहिं, आतम बुद्धि अहं बिनु मोरी।
पर परमारथ रूप नृपति वर, कार्य करहिं गुनि सेव अथोरी।
हर्षण कहनि सिखी सी लागति, अनुभव बिना बकब बड़ि खोरी।

(६३८)

समय समुझि तिरहुत महराज।
लक्ष्मीनिधिहिं अवध को पठये, सियहिं लिवावन काज।
संग सखा शुचि मंत्री महिसुर, सेवक सुखद बिराज।
बीच बीच वर वास करत सब, पहुँचे प्रभु पुर आज।
विपिन प्रमोद देखि मन मोदे, मनहु पाय सुख साज।
विधिवत न्हाय पूजि पुनि सरयू, प्रेम पगे भल भ्राज।
किय अगुवानी राम अनुज युत, मिलत दोउ दल छाज।
हर्षण चले लिवाय नगर निज, श्यालहिं सहित समाज।

(६३९)

गजहिं चढ़े श्याल भाम छत्र सिरहिं सोहे।
श्याम गौर मुसुकि मुसुकि त्रिभुवन मन मोहे।

देखि देखि युग किशोर, पुर वासी बनि विभोर।
रूप सुधा पियत तऊ, तृषित दृगन दोहे।
श्री निधि शोभा अपार, कोटि काम मदहिं गार।
छिटकि रह्यो पुर प्रकाश, पटतर कहु कोहे।
सनि सुख नरहु नारि, पगे प्रीति गये वारि।
हुलसि हुलसि रसहिं रसे, हर्षण दृग जोहे।

(६४०)

आज उत्सव को रचाये अवधवासी, घर घर में मंगल मनाये प्रकाशी।
राज मार्ग अरु हाट चौहटा, सजे सबहिं विधि कहै को छटा,
गृह गलियों में धूम माची सुभाषी।
स्वागत साज कहे को पारी, प्रेम पगे सबहीं नर नारी,
पूजै प्रणय पुष्प श्रीनिधिहि हुलासी।
देत दुंदुभी देव सुखारे, जय जय कहहिं बजाय नगारे,
हर्षण हर्षित वर्षहिं सुमन अकाशी।

(६४१)

अवधपुरी छवि खानी लखै सिय भैया।
कहि मृदु वचन राम दिखरावहिं, पाणि परशि विहँसत सुख छैया।
लक्ष्मीनिधि को रूप अनूपम, छहरत छबि शत मदन मोहैया।
अवध नगर में कहर मची है, लहि के लोचन लाभ लोभैया।
लखि लखि श्याल भाम की शोभा, हर्षै सिगरे लोग लोगैया।
जात चले सबके मन मोहन, श्याम गौर पुर चित्त चोरैया।

पहुँचे राज दुआर सबहि लै, भो सनमान कहै को गइया।
हर्षण उतरि गजहि नृप वारे, भूपति मिलन चले पुलकैया।

(६४२)

कौशल पतिहिं प्रणाम किये हैं।
दशरथ देखि हृदय महँ लीने, जनक सुवन प्रभु प्रेम पिये हैं।
सभा मध्य सिंहासन बैठे, करत प्यार निज अंक लिये हैं।
पाणि परसि पूंछत कुशलाई, श्रीनिधि सबहिं सुनाय दिये हैं।
जननि जनक की विनय बहुरि कहि, दिये भेंट जो सो पठये हैं।
अन्त: पुरहिं जाइ पुनि प्रणमें, कौशिल्यादिक मातु मये हैं।
करि वात्सल्य सोउ सुख दीन्ही, राम सरिस निमि कुँअर हुए हैं।
हर्षण भेंट बहुत विधि दै कै, सिया भ्रात शिर सकुचि नये हैं।

(६४३)

श्री निधि गवने स्वर्ण सदन को।
जाइ मिले श्री सिया भगिनि कहँ, औरहु अनुजा सह सखियन को।
जनक लली अरु लाल मिलन की, कहै कौन कवि प्रीति सघन को।
प्रेम पगे विरहातुर दोऊ, बहत वारि दृग भूलि स्वतन को।
करत प्रणाम सियहिं लै गोदी, धीर धरे निमि कुँअर अपन को।
मधुर मधुर मृदु वचन बुझायो, धीर धरी भगिनि लखि मन को।
नैहर कुशल कहे बड़ भइया, पितर-तिया-पुर विरहहिं गन को।
हर्षण भेंट विविध विधि दीन्हेउ, वसन विभूषण बहु बहु धन को।

(६४४)

लखो रे भैया-भगिनि अनन्द घरी।
चरण पकरि श्री निधि के सीता, भेंटत भाव भरी।
भ्रात उठाय हिये महँ-लावत, प्रेम प्रवाह परी।
दूनहु इक एकहिं नहवावत, अखियन अश्रु झरी।
निरखत नयन अघात न नेकहु, सुधि बुधि खोय खरी।
मुख ते कछु कोउ बोल न पावत, पुनि कछु चेत करी।
कुशल परस्पर पूंछि प्रेम पगि, फेंक विरह गठरी।
युगल नेह के मूर्ति को सुमिरन, हर्षण हृदय हरी।

(६४५)

सिय सतकारी सबहिं विधि भैया।
भातृ भाव भरि प्रेम प्रबीनी, नैहर नेह बरणि नहिं जैया।
पाद्यादिक दै नैवेद्य पवाई, पुलकि पुलकि परसी सुख छैया।
अचमन दै पुनि पान गन्ध दै, सह सखियन मन मोदहिं पैया।
आरति हरणि आरती करिके, मंगल स्तव पढ़ि यश गैया।
पितु पुर सुरति हृदय भरि आंसू, पुनि पुनि पूंछति प्रिय कुशलैया।
मइके को कुत्ताहु अति प्यारो, सत्यहिं सीता बानि सोहइया।
हर्षण भाभी जननि जनक की, सुनी कुशल पुर-जड़ लौं चैया।

(६४६)

सत्यहिं श्री निधि प्रेम दिवाने।
तथा राम लखि हर्षे तिनको, विरह तपे निज नयन जुड़ाने।

तेहिते तिनहिं कहैं सब ये तो, अहै राम हर्षण जिय जाने।
प्रेम राज आसन पधराये, राम रसिक सुख धाम सुहाने।
लक्ष्मीनिधि की तिलक कियो कर, नयन नीर ते भाव भुलाने।
बर्षहिं सुमन जयति जय उचरत, देत दुंदुभी देव दिखाने।
धनि धनि प्रेमी धनि प्रेमास्पद, एक होय दुइ लसत बखाने।
जनक सुवन बनि दास अहं बिनु, सकुचे सहज स्वरूप समाने।

(६४७)

देखि मैथिलन राम प्रहर्षे।
अनुजन सह लक्ष्मीनिधि सोहे, लहि सनमान सबहिं चित कर्षे।
सबको भयो महल मधि वासा, जहँ सुपास सब भाँतिहिं झरसे।
सहित भ्रात रघुनन्दन सुख सनि, स्वागत कर्ता जहँ रस वर्षे।
तहँ को आनन्द को बिनु अनुभव, कहै कौन विधि बिनु प्रभु पर्शे।
मन वाणी बुधि पार अनूपम, भव सुख की जहँ गन्ध न दरसे।
राम कृपा कोउ जान रसिक जन, भव रस विरत प्रेम पथ सरसे।
हर्षण हाय कबहुँ सो स्वपनो, लखिहौं हिय महँ करत कहर से।

(६४८)

श्याल भाम दोउ ललित लोभनियाँ।
पलंग बैठि बतरावत दोऊ, गौर श्याम सुख रूप शोभनिया।
चितवनि चारु चित्त को चोरत, मन्द हँसनि मधु वरष बोलनिया।
हिय हिय मेलि परशि सुख पावत, बने परस्पर मनहिं मोहनिया।

इक के द्वै दुइ के इक होवत, रसमय रसिकें रसहिं दोहनियाँ।
परमैकान्तिक भौमा सुख सनि, होइ के अमृत अमिय चखनिया।
सोय गये पुनि तिरसठ सम ह्वै, रसाद्वैत सुख धाम सोहनिया।
हर्षण सो शयनानन्द स्वप्नहु, लखै न विषई जगत जोहनिया।

(६४९)

जागि करति दोउ नई नई लीला लखत ललचाने हो।
रघुनन्दन निमिनन्दन प्यारे, इक इक सुख के हेतु रसीला,
रमत रस छाने हो।
परिकर वृन्द निरखि नित प्रमुदित, श्याल भाम के रंग रंगीला,
रंगे मन माने हो।
जनक सुनैनानन्द प्रवर्द्धनी, राम वल्लभा सिया सुशीला,
हृदय हरषाने हो।
देखि देखि दोउ प्रीति पुरानी, सुखी सोउ सुख सिन्धु स्वमीला,
परम प्रिय जाने हो।
तैसहिं दशरथ सह निज नारिन, मानत आनँद अधिक सुभीला,
प्रेम परवाने हो।
सचिव संत गुरु पुर नर नारी, सबहिं दोउ के प्रेम मदीला,
उरहिं हठि आने हो।
जड़ चेतन भल भाव भुलाने, हर्षण हेरत हृदय हँसीला,
हुलसि सुख साने हो।

(६५०)

गुरु वशिष्ट के आश्रम आये।
लक्ष्मीनिधि रघुवरहिं साथ लै, दण्ड प्रणाम किये भल भाये।
मुनिवर हृदय लाय सुख साने, प्यारत नयन नीर नहवाये।
बैठि सुआसन तिन्ह बैठाये, राम सीय पर तत्व सुनाये।
जनक सुवन सुनि परम प्रहर्षे, अहं बिना बहु भेंट चढ़ाये।
मातु पिता की कही कुशलता, जनित वियोग विपति बहु गाये।
सहित समाज नृपति अरु आपहिं, राम सिया लै बेगि बोलाये।
हर्षण सुनि मुनि मन महँ मोदे, चलन कहे निमि नगर सुहाये।

(६५१)

जनक सुवन बिनु अह मम आज।
चार वर्ण अरु आश्रम चारी, बसहिं अवध नर नारि समाज।
अन्त्यज पशु पक्षी लौं जेते, सब महँ भगवत भाव बिराज।
सबहि सविधि भोजन करवायो, भगिनि भाम के मंगल काज।
सबहिं दिये पहिनाव विविध विधि, वसन विभूषण सुख की साज।
कैयक कोटि धेनु दै विधिवत, विप्रन तोषे भावहिं भ्राज।
सब प्रकार को दान यथा रुचि, पाये याचक जै जै गाज।
हर्षण-विभव-त्याग भल भावहि, देखत इन्द्र कुबेरहु लाज।

(६५२)

विहरत अवधहिं अवध बिहारी, संग में सुखकर श्याल लिये।
मज्जन अशन शयन संग तिनके, तिन बिनु नहि चित चैन किये।

तैसहि सिया भ्रात मन जोगवति, सुखी रहहिं प्रभु प्यार पिये।
भरत लखन रिपुसूदन प्रमुदित, जनक सुवन सुख के रसिये।
राउ रानि करि प्यार विविध विधि, राम सरिस तेहि राख हिये।
सदगुरु सचिव सकल पुरवासी, श्रीनिधि सुख हित धरत धिये।
लक्ष्मीनिधि लखि कृपा अनूपी, राम सिया सुख हेतु जिये।
हर्षण हृदय हेरि नव आनँद, सर्वस प्रभु पै वार दिये।

(६५३)

कहे न कोई जनक सुवन यश गाई।
राम सिया जेहि नयनन निरखत, तनिकहुँ हिय न अघाई।
परमैकान्तिक सुख अरु सेवा, दिये प्यार अमिताई।
सब विधि बने तिनहिं के दोऊ, वारि अपनपौ साँई।
तैसहिं श्रीनिधि प्रेम विलक्षण, परा भक्ति को पाई।
प्रभु को विरह शंक हिय आनत, भान भूलि अकुलाई।
भाम भगिनि सुख निज सुख जानत, स्वेच्छा सकल नसाई।
हर्षण हिय कैंकर्य निरत नित, अह मम बीज जराई।

(६५४)

राम रसिक मिथिलेश कुँअर को।
साहचर्य अनुपम भल भ्राजत, जहँ न जाय मन विधि हरि हर को।
युगल बने इक एक के नेही, प्रेमाद्वैत परम प्रिय पर को।
मज्जन अशन शयन दिनचर्या, संग संग सरसति इक समसर को।
देन परस्पर सुख को चेष्टित, विहरत अवध मदन मन हर को।

रहनि कहनि रस रूप मधुरिमा, मोहति मनहिं महा मुद कर को।
श्याल भाम लखि एक एक कहँ, जियत जगत हिय करत कहर को।
हर्षण हृदय सुरति सो आये, भव सुख भासत मूल जहर को।

(६५५)

भरत लखन रिपुदमन के गेह।
श्री निधि जात लहत सनमानहिं, भाम भगिनि को सुखद सनेह।
करि सतसंग राम की चर्चा, पगि पगि प्रेमहिं बनत विदेह।
तथा जाय रघुवंशिन के गृह, सेनज सचिवन के प्रिय एह।
सरसरि उपबन बाग वाटिका, बिहरत मन्दिर तीरथ जेह।
ऋषि मुनि संत आश्रमनि गवनत, देत भेंट वर्षत जनु मेह।
नृत्य गान अभिनव हरि यशमय, देखत सुनत रसे तहँ तेह।
हर्षण श्याल भाम की प्रीति, जो न धरै हिय खावै खेह।

(६५६)

भाम भगिनि के नेह नये।
नित नव उत्सव नित नव आनंद, प्रीति विवश बहु दिवस गये।
जानि विलम्ब जनक बुलवाये, दूत भेजि निज पुत्र चये।
समय पाय लक्ष्मीनिधि प्रणमें, कौशल पति पद शीश दये।
सुत सुत वधू संत गुरु सचिवन, सह समाज निज नारि लये।
चलै पहुनई करन सु मिथिला, पिता बहुत विधि विनय कये।
सुनत भूप मन मुदित कहेउ हाँ, अवशि चलहुँ हिय हर्ष हये।
हर्षण चलन साज सब साजे, कुलगुरु आयसु जयति जये।

(६५७)

सिय को नैहर नेह नवल री।

परम प्रसन्न प्रेम पगि प्यारी, सुनत श्रवण कल जाव स्वथलरी।
माण्डवि उर्मीला श्रुतकीरति, सह सहेलि तिमि दासिन दल री।
संग सिया के जो जो आये, सो सब चाहै साथहि चल री।
मिथिला मोह मनहिं महँ छायो, अनुपम अकथ अगाध अमल री।
अनुजा अनुज रहे जो निमिपुर, निमिवंशी लघु वयस के भल री।
तिनके हेतु भेंट बहु साजी, जनक पुत्रिका प्रेम प्रबल री।
तैसहि भाभी भ्रात बड़े जो, तिन हित हर्षण हर्षि सुफल री।

(६५८)

लक्ष्मीनिधि बजवाय नगारे।

भगिनि बिदा कराय चले हैं, संग लिये सब भाम पियारे।
सह रनिवास भूप भल गवने, ऋषि मुनि सचिव समाज सम्हारे।
यथा बरात प्रथम गई ब्याहे, तिमि प्रमोद मन माहिं अपारे।
पंच धुनी छाई महि व्योमहिं, वर्षि सुमन सुर जयति पुकारे।
बीच बीच वर वास बसत सब, पहुँचे मिथिला नगर दुआरे।
जनक आई आगू ह्वै लीन्हे, सहित समाज बनाव पसारे।
हर्षण मिलनि पेखि सब हर्षे, कहि न जाय जस मोद महारे।

(६५९)

नगर में आज अलि मेरी मगहिं मग धूम माची है।
सिया को ले कुँअर आये, पुरी पगि प्रेम नाची है।

मोहते है संग मन मोहन, प्राण प्यारे राम रस दोहन।
भरत औ लखन रिपुसूदन, सखा सब सोह साँची है।
सोह श्री मद्राजराजेश्वर, नारि के सह श्री गुरु मुनीश्वर,
अवध की सब समाजा है, गहागह वाद्य खाची है।
नाचते है हय भी हिहिनाते, चिक्कारते विपुल गज माते।
घर घराहट रथ की राजे, अग्नि को केलि राँची है।
देवता भी पुष्प बहु वर्षे, बोलत हैं जय जयति दर्शे,
दुंदुभी दे हरषि हर्षण, सिया वर प्रीति याची है।

(६६०)

सह समाज दशरथ नृप वासा।
कमला तीर अयोध्या नामक, ब्याह समय जो नगर प्रकाशा।
वैभव युत विस्तार भवन में, भयो जहाँ सब भाँति सुपासा।
सुर पुर दुर्लभ भोग विभूती, कल्प वृक्ष सुर धेनु सकासा।
रिद्धि सिद्धि जोगवै सुख दानी, भरा भवन बहु दासी दासा।
नृत्य गान करि रिझवै राजहिं, विविध अप्सरा वदन विकासा।
नाटक कला कहै को गाई, साधु समागम समय सुभाषा।
नौबति बजति रहति नित हर्षण, धनि धनि कौशल नृपति निवासा।

(६६१)

जनक लली पितु के गृह आई।
सुनत सुनैना सानँद दौरी, विरह सरित उतराई।
परिछन करि पालकी उतारी, सिद्धिहु सुख न समाई।

भेंटि चूमि दोउ दृग रस झारी, पुनि पुनि लीन्ह बलाई।
माण्डवि उर्मीला श्रुतिकीरति, मातु प्यार तिमि पाई।
सादर चली लिवाय कुँअरि पुनि, लै आई अंगनाई।
दै आसन सेवी बहु विधि ते, हर्षण भान भुलाई।
भाभी ननंद मातु औ पुत्री, प्रेम पगी रस छाई।

(६६२)

लली मोरी जीवन ज्योति जगी।
विरह सरित बूड़त मैं बांची, निरखत नयन मगी।
देखि तुम्है हिय में हरियाई, जिमि कृषि वारि पगी।
अंधहिं लोचन लाभ सुहायो, गइ निधि हाथ लगी।
शशिहिं चकोर कमल लखि भानुहिं, तस मम हृदय रंगी।
लखत मेघ मोरी सुख सानति, तिमि मति नचन लगी।
प्राण-प्राण जिय की जिय मोरी, सुख सुख सर्व सगी।
हर्षण जिय की जरनि विनाशिनि, लखत बलाय भगी।

(६६३)

मैया मोरी पाऊँ कहाँ तव प्यार।
रहत रही यद्यपि सुख धामहिं, सुखमय सब नर नार।
तदपि तिहारे अंक को आनंद, दुर्लभ नयन निहार।
अम्ब दीन भोजन हित हियरा, ललचत रह्यो हमार।
नैहर नेह सुरति करि जननी, भूलति देह सम्हार।
श्रावण भादौं माह दृगन बसि, करते रहे विहार।

आज सुखी भइ पितु पुर देखत, भई विरह सरि पार।
हर्षण भैया लाय लिवाये, दिखराये सुख सार।

(६६४)

जनक लली अरु अम्ब सुनैना।
प्रेम पगी करि बात परस्पर, कहत बनै नहिं बैना।
अंक लिये जननी सुख पावति, प्यार पाइ सिय चैना।
तैसेहिं सिद्धि लिये निज ननदहिं, नेह नयन पुलकैना।
योग-वियोग बात रस सानी, इक इक की सुख दैना।
सुख समुद्र दोउ गोता लेवहिं, पियहिं मधुर मधु सैना।
मनहु प्रेम मूरति दोउ राजै, झरहिं सुधा रस ऐना।
हर्षण चन्द्र युगल नृप आँगन, हरहिं ताप छबि छैना।

(६६५)

जनक सुवन दशरथ पद वन्दे।
पाणि जोरि प्रभु प्रेम में पागे, बोले अभिमत वचन अमन्दे।
अनुज सहित मम भवन बसे नित, राम रसिक रघुकुल नभ चन्दे।
सेवन चहौ चारु चारहुँ कहँ, करहु कृपा मोहिं करन अनन्दे।
आयसु पाय चलै लै साथहिं, सादर सकल भाम सुख कन्दे।
सुनत सुनैना सादर धाई, सिद्धि सहित सजि आरति नन्दे।
नेह नयन रोमांच कंपत तन, परी विलक्षण प्रेम के फन्दे।
हर्षण निरखि आरती कीन्ही, मेटि विरह दुख दोष के द्वन्दे।

(६६६)

रामहिं निरखि निहाल भई हो सुनैना मैया।

प्रेम पगी वात्सल्य विभोरी, भूलि भान दृग नीर मई।

अनुज सहित प्रणमें रघुनन्दन, सूंघि शीश सो सींचि दई।

दै अशीष करि प्यार पुलक तन, भीतर भवन लिवाय गई।

सिंहासन दै श्रीनिधि नारी, पूजी षोडष भांति चई।

कुशल प्रश्न दोउ पूंछहि पुनि पुनि, सास पतोहू नेह नई।

निरखि निरखि मन मोहन मूरति, दोउ अपनपौ वारि दई।

हर्षण सुख के सिन्धु समाई, विरह विपति करि पार लई।

(६६७)

कौशल पतिहिं जनक सनमानी।

सादर सब विधि करि सेवकाई, बार बार वर विनय बखानी।

हिलिमिलि पूँछि चले निज भवनहिं, निरखेउ नयन राम छबि खानी।

श्याम सहानुज श्वसुरहिं वन्दे, सोउ लिये सब कह हिय आनी।

प्रीति पगे बोले जामातन, आज परा ससि सूखत पानी।

भरि वात्सल्य प्यारि सुख सारन, कहेउ नारि सों मधुरी बानी।

मन वच करम सेई सुख दीन्हेउ, प्राण प्राण जिउके जिउ जानी।

हर्षण हृदय हार ये हमरे, चारहु रतन सदा सुख दानी।

(६६८)

निरखि नयन नव नव अनुरागी।

प्रेम पगी भूली सब तन मन, लिपटि मैथिल पितु पद लागी।

लिय उठाय मिथिलेश अंक महँ, श्रवत नयन निज नेह अदागी।
कियो प्यार बहु विधि भव भूले, सुख के सिन्धु सने बड़ भागी।
कहे सुनहु हे लाड़िली मोरी, आज अंजोर भयो जग जागी।
जो पै तुम्हें दृगन भरि देखेउ,जरत बच्यो बड़ विरह के आगी।
मिथिला भाग उदय भै आजहिं, आनंद अम्बुधि विहरत बागी।
हर्षण त्रिभुवन देखि सिहै हैं, सकुचि सिया पितु प्यारहिं पागी।

(६६९)

श्रीनिधि जननि जनक शिर नाय।
आशिष प्यार लहे मन भावत, कहे अवध सुख गाय।
सुनि सुनि श्रवण सोउ सुख साने, पुत्र प्रभू-प्रिय पाय।
राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन, लिये कुंअर पुलकाय।
गंवने सिद्धि सदनं सुख फूले, मिली सिद्धि रस छाय।
आरति करी स्वपति सह सबकी, पुनि पुनि शीश नवाय।
करि भोजन विश्राम किये सब, दम्पति सेइ सुहाय।
हर्षण श्याल भाम संग सोये, रस के सिन्धु समाय।

(६७०)

अलबेले कुँअर की नारि भली।
भोग पवाय सासु ते पूँछी, सियहिं लिये निज सदन चली।
पहुँचि पलंग ननदहिं पौढ़ाई, चांपि चरण पथ श्रमहिं दली।
मधुर मधुर करि बात परस्पर, प्रेम मूर्ति इक सांचे ढली।

बिरह बितय संयोग सुखहिं सनि, सोई हिय लगि कमल कली।
सो सुख सुषमा सरसत शोभा, अनुभव कर दोउ भूप लली।
सुख के सिन्धु समाई सहजहिं, धन्य धन्य प्रभु प्रेम पली।
सुमिरि सुमिरि सो हर्षण हुलसत, सीय कृपा सब आस फली।

(६७१)

मिथिला महल मनहारी, जहँ राम सिया सुखकारी।
विहरैं प्रेम प्रमोदे, करत अनेक विनोदे, सुखकर सरहज सारी।
सास श्वसुर के प्राणा, श्रीनिधि के जिउ जाना, सेवहिं प्रेम पसारी।
पुर के लोग लोगाई, निरखहिं निशिदिन आई, नव नव नेह अपारी।
दरश परश करि सेवा, भूलहिं भान जितेवा, दीन्हे सरबस वारी।
विविध वेष सुर आवै, जीवन सफल बनावैं, वर्णहिं यश अघहारी।
ऋषिमुनि संत जमाता, निरखि निरखि प्रभु गाता, रस में रमैं सुखारी।
सुख के सिन्धु समाये, राम सिया मन भाये, हर्षण हृदय बिहारी।

(६७२)

मिथिला बसे अवध महाराज।
दिन प्रति सौगुन स्वागत सुखमय, होत पहुनई सहित समाज।
सीय मातु रघुवर के मातहिं, सेवति रमा सरिस निज याज।
मिथिला अवध समाज प्रहर्षित, बढ़त अहर्निशि सुख को साज।
समय समुझि लहि आयसु बरबस, गये अवध दशरथ कछु काज।
जनक रुची गुनि रामहिं छोड़े, सहित भ्रात भल भावहिं भ्राज।

पहुँचि पुरहिं रखि रामहिं हिय महँ, पगे प्रेम भूपन सिरताज।
हर्षण राज काज को देखत, चढ़े पुत्र के सुरति जहाज।

(६७३)

श्वसुर पुरी रमि रहे सिया के सैंया।
मैथिल प्रीति पगे निशिवासर, भाव के भूखे भैया।
श्याल संग विहरत मन मोदित, बिसरे बाप औ मैया।
ऋतु अनुरूप सुभग सब साजा, सुलभ सकल सुख दैया।
करत केलि कल कुंजन कुंजन, कंचन बन बिहरैया।
ऋषि मुनि संत देव सुख सानत, निरखि नवल छबि छैया।
सारी सरहज सास श्वसुर सब, सेवहिं सर्वस पैया।
हर्षण सीताराम सुखी रह, सोइ कर लोग लोगैया।

(६७४)

जन मन रमण सलोनी सलोना।
राम रसिक रसिकिनि सिय प्यारी, रसिकन हेतु रसहिं रस बोना।
सिद्धि सदन सुख सागर शोभित, सेवति सरहज सुख की भौना।
सखिन सहित संगीत सुधा ते, पोसति समय समय नृप छौना।
युगल केलि अरु सुख के हेतहिं, करति कला कमनीय पटोना।
श्यामा श्याम सुखद रस पीवति, स्वयं रसी भरि भरि दृग दोना।
आपु हर्षि हर्षावति दोहुँन, ननँद लली ननदोई अयोना।
हर्षण प्रीति विलक्षण परमा, वर्णत बेरि भये सब मौना।

(६७५)

राम रसिक हँसि हरण हिया रे।
मिथिला बसि रस धार बहाई, मग मग कहँ बहु बोरि दिया रे।
जन जन के जिय बनि दृग तारा, सबको सर्वस लूट लिया रे।
वशीकरण मन मोहन मधुमय, फूंकि मंत्र जन जाग जिया रे।
करि बेकार जग ते जग जीवन, जोर जालिमा जुलुम किया रे।
मची कहर पुर खोरिन खोरी, रूप रसे सब पुरुष तिया रे।
आनँद अम्बुधि गोता लेवहिं, सीता रामहिं धारि धिया रे।
हर्षण मैं अरु मोर गयो हठि, परमा प्रीति पियूष पिया रे।

(६७६)

सेवित सिद्धि सदन अष्टयाम।
श्री निधि के जिय जीवन रस मय, प्राण प्राण भगिनि भाम।
सिद्धि कुँअरि सह कुँअर प्रमोदित, सेव सदा शोभ धाम।
जेहि विधि सुखी रहहिं दोउ प्रियतम, सोइ करहिं सो अकाम।
जोगवत रहहिं प्रमादहिं तजिकै, दृगन देखि रटहिं नाम।
स्वयं हर्षि हर्षावहि तिन कहँ, परम प्रीति रसहिं राम।
सुख मय बने अहर्निशि सबके, कलित कथा गुण ग्राम।
हर्षण हेरि हेरि हुलसावत, वारि अपुहिं बिना दाम।

(६७७)

सोये श्याल सहज सुख साने।

श्याम सुभग रस रूप भामके, पियत अधर मन माने।
रसमय पलँग रसहिं उपवरहन, रसमय जनक सुवन छबिवाने।
हर्षण दोउ रस सिन्धु समाये, ब्रह्म जीव अलखाने।
मन बुधि वाक् जहाँ नहि जावै, किमि विषई पहिचाने।

(६७८)

बाजति नौवति नव दुआर।
भोर भयो जनु जागि जगावति, विप्रहु वेदन कर पुकार।
चह चहात पक्षी निज नीड़न, गाव गुणी भैरव विचार।
हर्षण धनि धनि ब्राह्मी बेला, जन जन ब्रह्महिं को सम्हार।
जेहि में जाग जगत के जीवा, करै कर्म श्रुति के अधार।

(६७९)

भोर भयो भल भावन तेरे।
ब्रह्म मुहूरत ब्रह्म रसहिं को, सरसावन जन जन हिय हेरे।
रसमय नौबत बजत मधुर मधु, वीणा वेणु अली गन टेरे।
सुन सुख पाय जगे दोउ रसिया, आलस भरे गरे भुज मेरे।
विथुरी अलकैं झँपि झँपि पलकें, कोटि काम सुषमा जित जेरे।
लिपटि रहे इक एक अधारे, सिद्धि तबहि सखियन लैके रे।
आरति करी रसहिं उपजावति, प्रेम पगी प्रमुदित रस लेरे।
हर्षण सो सुख कहत बनैना, जानत रसिक रहे जो नेरे।

(६८०)

मधुर मधुर मन मोहन दोऊ।
चितइ रहे एक एकन काहीं, लीला ललित लखन जिय जोऊ।
उतरि श्याल सह सिद्धि सुभाये, प्रभु पद माथ धरे सुख मोऊ।
हर्षण हरषि राम हिय लाये, अभय भये पत्नी पति सोऊ।
रामहु सुखी भये लहि दोहुँन, केहि विधि बरणि कहै कवि कोऊ।

(६८१)

प्रभु पद पाँवरि परसि पिन्हाये।
अम्बुज अम्बक अम्बु चुआवत, रसहिं रसे निज शीश झुकाये।
श्याल सुभाव निरखि सुख सागर, पाये सुख शुचि सुठि सरसाये।
हर्षण भाम श्याल भुल मेली, बाहर कक्ष चले चित चाये।
झाँकी युगल निरखि मन मोहनि, सिद्धि हृदय नहिं हर्ष समाये।

(६८२)

करि गो दरश युगल सरसाये।
रोम रोम रमि रहे देव सब, भावत भाव भरि भले भाये।
पूजि यथा विधि गौ कहँ दोऊ, प्रमुदित तेहिं दै दान सुहाये।
हर्षण झूलन बैठि प्रमोदे, सोहत आलस अतिहिं भगाये।
अरश परश आलिंगन करिकरि, दोउ कुँअर सुख सिन्धु समाये।

(६८३)

बलि बलि जावहिं नवल सुबाला।
हरुये हरुये झुलै हिंडोरा, रूप रसहिं पी बनैं रसाला।

भैरव राग मधुर मधु गाई, सरसहि सिद्धि सहित सुख शाला।
छत्र चमर कोउ बींजन धारी, कोउ पय पान पुष्प मणि माला।
भाव भरी प्रमदा सब सोहहिं, रसमय रिझवहिं दशरथ लाला।

(६८४)

सिद्धि विनय सुनि सहज सुभाये।
बल्लभ कुंज चले दोउ रसिया, कोटि काम छबि छाजत छाये।
कुंज अली अभि आरति करि कै, कोमल कलित सुपीठ बिठाये।
दंतवन कीन्ह कुँवर तहँ दोऊ, हर्षण हर्षि सिद्धि सरसाये।
भाग भली विधि आपन मानी, लखि लखि श्यामल गौर जुड़ाये।

(६८५)

मधु मधु-पर्क मनोहर दोऊ।
पाइ रहें रस रसे रसीले, लखत परस्पर आनँद मोऊ।
सिद्धि कुँवरि पुनि पान पवाई, सनी सनेह सरस सुख सोऊ।
लखि लखि युगल किशोर की झाँकी, हर्षण हरषिहृदय लिय गोऊ।
अलिगन नृत्य गान करि सेई, आनँद सनी रसहिं रस वोऊ।

(६८६)

आरति हरण आरती नीकी।
सिद्धि करति अति आनँद पागी, नचहिं अली भल भावत जी की।
मधुर मधुर गुण गाय राम के, पुजवहिं आस अमोल अली की।
हर्षण सुमन सुरन झरि लावत, जय जय कहि भरि भाव भली की।
वाद्य बजत बहु भाँति के सुख प्रद, उर उमगावन सुकृत फली की।

(६८७)

कलित कुंज कमनीय न्हानकर।
गति गयन्द भुज अंशनि धारे, पहुँचि गये तहँ दोउ रसिक वर।
करि आरति कुंजेश्वरि दीन्ही, आसन कोमल कमल कलित तर।
हर्षण भूषण वसन उतारे, छबि छहराय छजे छबि के घर।
श्याम गौर तन की सो शोभा, कहत बने नहिं रसहिं रसहिं झर।

(६८८)

कुँवर कुँवरि श्यामहि सुख सरसे।
उबटत अंग भरे भल भावन, परसि प्रमोदत अमृत वरषे।
श्याल शीश धरि गंध सुश्यामहु, मोहत मधुर मनोहर परशे।
उघरे अंग मोंहि दोउ लिपटे, हर्षण हृदय हेरि हँसि हरषे।
युगलानन्द देखि आनन्दी, सिद्धि विभोरि भई चितकर्षे।

(६८९)

तन धरि तेल नहात मुदित मन।
लक्ष्मीनिधि रघुनन्दन रस सर, पगे प्रेम पुलकाय सुभग तन।
प्रमुद पीताम्बर पहिरि पुनः दोउ, यज्ञ कुंज चलि दीन्ह जगत धन।
हर्षण पहुँचि प्रमोद बढ़ाये, भाम श्याल सरसाय छननहिं छन।
आसन बैठ छविहिं छहराये, दम दम दमकति देह हरषि गन।

(६९०)

तिलक स्वरूप परस्पर कीने।
केशर खौर भाल भल चन्दन, उर्ध्व रेख त्रय चीने।

करि सन्ध्या सूर्यार्घ सविधि दय, अर्चिसु आहुति दीने।
हर्षण दान विविध दै दोऊ, भाव समाधिहिं लीने।
पगे परस्पर प्रेम मगन मन, चित्त-गगन दोउ बुद्धि के झीने।

(६९१)

उतै सिद्धि सिय सेव सम्हारति।
परम प्रेम भरि भाव हरषि हिय, त्रिकरण सरबस वारति।
कुँवर प्रिया सिय सुख सो सुख लहि, हर्षण हिय महँ धारति।
निरखि निरखि नव नेह माधुरी, सियहु सदा सुख सारति।
भाभी ननंद की प्रीति पुरानी, बिसरै नाहिं बिसारति।

(६९२)

निरखत एक एकन की ओरी।
श्याल भाम रस रसे परस्पर, परम प्रेम पगि भये बिभोरी।
सात्विक चिन्ह उदय दोउ केरे, लोक वेद दिय तृण सम तोरी।
मधुर मनोहर मुख-मधु पीवत, हर्षण लिपटि रहे रस बोरी।
दो के एक भये सुख साने, परमैकान्तिक भाव में सो री।

(६९३)

सखि गण सरसि सुभाय सुहाई।
श्याल भाम रस रीति दुहुन कहँ, हर्षित चली लिबाई।
सुखद सुहावन शुचि सिंहासन, सदन श्रृंगार बिठाई।
हर्षण तहँ अलि युत अलबेली, सिद्धि आरती गाई।
नृत्य गीत वर वाद्य मधुर मय, रहेउ तहाँ रस छाई।

(६९४)

सरहज श्याल श्रृङ्गारत रामहिं।
नख शिख बसन विभूषण साजे, सोहत श्याम सुमोहन मारहिं।
तैसेहिं सिद्धि सहित रघुनन्दन, सिंगारेउ सुठि सुभग सुश्यालहिं।
हर्षण युगल अनूपम झाँकी, मधुमय मधुर महा महिमा महि।
लखि लखि लक्ष्मी निधि की बामा, हर्षति हृदय अघाय अकामहि।

(६९५)

सिद्धि सदन सीतहिं सिधि लाई।
ढारति चमर छत्र सिर दीन्हें, अलिगन गीत वाद सरसाई।
जानि समय मुद मंगल कारी, राम बाम सिय सुभग बिठाई।
पूरण काम राम सुख सरसे, प्रेम पगे रस सिन्धु समाई।
अनुपम अकथ अगाध छटा लखि, कुँवर कुँवरि गे भान भुलाई।
पुनि धरि धीर राम सिय हाँथन, दान विविध विधि द्विजन दिवाई।
मुनिगन मंगल स्वत पाठे, रक्षा मंत्र सहित जय गाई।
वरषत सुमन सुरहु सुख फूले, जय कहि दुन्दुभि गगन बजाई।
अग्निहोत्र करबाय सतानंद, प्रेम पुलकि उर आनँद छाई।
भक्ति भक्त भगवत रस गाथा, अलिगण वीण बजाय सुनाई।
सिद्धि कुँअर लक्ष्मीनिधि दूनहु, आरति किये युगल सुखदाई।
हर्षण आत्म समर्पण कीन्हे, सियहु गई निज सदन सिधाई।

(६९६)

सीता सुख सह सदन सिधारी।

तबहिं राम रसमय लै श्यालहिं, अपने आसन द्रुतहिं पधारी।
धरि भुज अंश कपोलन साँटे, अलक अलक मिलि करत सुखारी।
नयनन नयन मिलाय सुझूमत, अधर सुधा कहँ पियत पियारी।
मृदु मुस्कात मंजु मधु बातैं, करत रसहिं बहु वर्धन वारी।
लखि लखि सिद्धि सरसि सुख सानति, मानत मन महँ मोद अपारी।
मधुर मधुर मधुमय शुचि व्यंजन, दीन्ही बाल भोग रसकारी।
दास राम हर्षण हिय हुलसत, पावत पेखि दोउ सुखसारी।

(६९७)

मृदु मुसकात मधुर मधु दोऊ।
नयन सयनि वर बैन मधुरिमा, कुँअरि लखति मन मोहित जोऊ।
करत कलेऊ सिधिकर परसी, मनहुँ सुधा सुठि स्वादत सोऊ।
अचमन लै पुनि पानहिं पाये, हर्षण मधुर गीत रस मोऊ।
बैठे सोह सिंहासन मधुरे, छबि छहराय रहे रस वोऊ।

(६९८)

आरति करति कुँवरि सुख सरसति।
भाव भरे दृग रसी रसहिं में, स्वपति सिया पति लखि लखि कर्षति।
मंगल स्वत पढ़ी मोद मन, पगि माधुर्य हृदय महँ हरषति।
सेवा साज सजे सखि ठाढ़ी, चमर छत्र छबि छल छल छहरति।
हर्षण नृत्य गान रस रासेव, प्रेमिन हिय रस लहर सुलहरति।

(६९९)

बाहर कक्ष गये रस रूपे।
छत्र चमर सिर लहरत लोने, अंग अंग अतिहि अनूपे।
श्याम गौर वपु सहज सुभायन, मरकत स्वर्ण स्वरूपे।
सेवक सखा सहानुज भेंटे, हर्षण दोउ सुत भूपे।
अति आनन्द सबहिं कहँ दीन्हे, मधुर मधुर मधु कूपे।

(७००)

द्वार देश दरशन दिवि दीन्हे।
रूप रसहिं बरसाय सुखद तम, सबहिं सुधामय कीन्हे।
बन्दी विरद विप्र पढ़ि बेदहिं, दर्शक जय जय भीने।
हर्षण गाय अपसरा नृत्यहिं, वाद्य बजत स्वर झीने।
सुरहु सुमन झरि लावत सुख भरि, दिव्य दुंदुभी दीने।

(७०१)

युगल किशोर मदन मन मोहन।
पेखि पेखि पगि रूप माधुरी, मुग्ध होहिं जग जीव जे जोहन।
वरषत विवुध प्रसून प्रसंसत, दुन्दुभि हनत जयत कहि छोहन।
सास श्वसुर शुचि सदन सिधारे, श्याम सुन्दर संग श्याल सुसोहन।
आशिश प्यार तहाँ दोउ पाई, बहुरि चले रसमय रस दोहन।
इष्ट देव लक्ष्मीनारायण, कीन्हे दरश दिव्य दृग ओहन।
सबहिं सुखद सुख रूप सरस पुनि, सोहे सभा कुंज कृप भौंहन।
हर्षण हरषि प्रभुहिं पहिनावत, प्रेमी प्रेम पुष्प स्त्रग पोहन।

(७०२)

सोहत सभा कुंज सरसाने।
रत्न जटित सम सूर्य सिंहासन, सिर महँ छत्र चमर लहराने।
वेद पुराण कथा भई रसमय, भगति ज्ञान वैराग्य बखाने।
प्रेमा भक्ति सु सद्गुरु वरणे, परमा प्रीति प्रवाह समाने।
नीति रीति परमारथ स्वारथ, सबहिं सुने प्रवचन सुख खाने।
लहि अवसर पुनि सुभग अपसरा, नर्तन लागी रसहिं रसाने।
सीताराम सुभग यश गावहिं, भावहिं भरि भरि भाव भुलाने।
हर्षण आनँद सिन्धु सुहायो, मग्न सभा मन मोद महाने।

(७०३)

सभा विसर्जित भइ सुख तेरे।
राम चले सिधि सदन सुहाये, भगिनि भवन गे कुँअर प्रवीरे।
सिद्धि मिली सरसाइ श्याम सो, आरति करि मुद मंगल प्रेरे।
सुभग सिंहासन राजि राम कहँ, सेवा कीन्ह सनेह सनेरे।
हास विलास भाव भलि भरि भरि, रिझवति राम रसिक रस घेरे।
जो सुख सुलभ सिद्धि निशि वासर, शार्द रमोमा ललचत हेरे।
सखि सह नृत्य गान की सेवा, करति मधुर मधु वाद्यन टेरे।
हर्षण हरषि हियहिं हुलसावति, राम रसिक रघुनन्दन केरे।

(७०४)

आवत भ्रात अवहिं सुनि सीता।
द्वार देश सखि संगहि लीन्हे, आइ मिली मुद परम पुनीता।

आरति करि अन्त: पधराई, हिय भरि भाव सुमंगल गीता।
अनुपम अकथ अगाध अलौकिक, हर्षण भ्रात भगिनि की प्रीता।
अनुभव करहिं सोइ सुख सांचो, मन बुधि वाणी पार अतीता।

(७०५)

सोहत सीय भ्रात की कनियाँ।
प्रेम विभोर कुँअर रस पागे, शेषहिं सो सुख कहत न बनियाँ।
भरि वात्सल्य विविध विधि प्यारत, सरसत सूँघत शीश सुहनियाँ।
चहुँ दिशि चन्द्रकलादि सखी सब, भलि भलि भ्राजहिं भव्य भगिनियाँ।
कुँअर सबहि भेटी बहु दीन्हे, दिवि दिवि भूषण वसन अगनिया।
निज कर सों कछु भोग पवायो, पुनि दिय पान गंध सुख सनिया।
सुमन सुहार रतन के गुच्छा, दीन्हेउ क्रीड़न वस्तु बहुनिया।
पुनि हिय हर्षण भरि भरि भावन, सियहिं सुनावत सुखद कहनिया।

(७०६)

प्यार सियहिं निज सदन सिधाये।
उमगत उर अनुराग अश्रु दृग, भाव भरे भल कुँअर सुहाये।
सिद्धि सदन शोभित श्री रघुवर, उठि उर मेलि समीप बिठाये।
करि प्रणाम पाद्यादकि दै के, सिधि अभि आरति कीन्ह अमाये।
हँसि कह राम सदन सिधि हमरो, जावहिं आप इतै कत आये।
मृदु मुसकाय कुँअर कह राउर, स्वयं सिद्धि सह सद्म स्वभाये।
पायो परम विराम रहसि रस, सोइहौं शांति सदन सरसाये।
हर्षण हँसहिं हँसाय परस्पर, सरसति सिद्धि सरस सुख छाये।

(७०७)

गवने भोग कुंज भुज मेली।
पद पखारि प्रिय पीठ सिद्धि दै, परसति व्यंजन प्रेम पुतेली।
अन्य कक्ष सखियन संग सोही, सीतहु जेंवन बैठि सुभेली।
मुसुकि मुसुकि सरहज सुख खानी, चंचल दृग रामहिं रस देली।
कंकण किंकिण नूपुर धुनि सुनि, राम रसहिं रस सिंधु सकेली।
मधुमय यंत्र अनेक बजाई, गावहिं गारि मधुर अलबेली।
श्याल भाम मुसुकाहिं परस्पर, लखि लखि सिधि नैपुण्य नवेली।
हर्षण भोग कुंज भल भावत, जहँ जेवत रस रसहि रसेली।

(७०८)

पावत प्रेम पगे दोउ भोग।
रसमय व्यंजन विविध प्रकारे, परसत सुखमय सिद्धि सुयोग।
रसमय राम रसहिं मय श्याला, रसमय सरसत भोग अरोग।
रसमय सिद्धि रसी रस माहीं, हर्षण हेरि हरै हिय शोग।
अशन समय आनँद अवलोकत, हर्षहिं अन्तःपुर के लोग।

(७०९)

पावत प्रेम पान दोउ अँचई।
विविध सुसुरभित परे मसालन, सिद्धि करन सरसत सुख सनई।
गंधादिक दै करि सिधि आरति, बहुरि कुंज विश्रामहिं लनई।
हर्षण दुहुँन सुवाय सेव करि, गइ प्रसाद सेवन मति महई।
श्री-निधि-नारि भाव भल भावत, हर्षे राम तासु गुण गनई।

(७१०)

सिय कर परसी सिद्धि प्रसादी।
प्रमुदित पाय अँचई पुनि प्रानहु, सियहिं पवाइ पाय अहलादी।
भाभी ननंद सुभग शुचि सेजहिं, किय विश्राम मधुर मधुवादी।
हर्षण सिधि सिय-राम-कुँअर को, पुनि उठि सेव सुचेष्टितनादी।
सकल भाँति कैकर्य निपुण सो, त्यागि स्व सुख तत सुख की स्वादी।

(७११)

सिद्धि सदन सुख शान्ति सुदायक।
रस भोगी रस पाय युगल उत, करि विश्राम जगे जग नायक।
मधुर मधुर मधु वेणु बजाई, गावति सेवति सिद्धि सुहायक।
सुनि सुनि श्याम सुभग सुठि श्याला, भूले ज्ञान गँभीर महायक।
पुनि प्रकृतिस्थ भये तहँ दोऊ, सिद्धिहिं रहे सराहि सु भायक।

(७१२)

श्याल भाम भुज अंसनि धारे।
पगे परस्पर प्रेम प्रवीने, भविष विरह सुधि सुधिहिं विसारे।
एक बिनु एक आत्महु नहिं चाहैं, सुख समृद्धि तृण गिनहिं पियारे।
हर्षण सिद्धि सदन आदर्शहिं, निरखत रूप मोहि मतवारे।
अपलक रहे निहारि भूप सुत, लोचन लोभी टरत न टारे।

(७१३)

मुख धोवाइ सिधि दुहुन बिठाई।
स्वाद सुधा सुठि सरस मधुर मधु, प्रेम पगी फल दीन खवाई।

अँचवन दै पुनि पान पवायो, सरसि सिया यश सुभग सुनाई।
हर्षण हर्षि कुँअर सब भूले, रघुवर गोद गिरे रस छाई।
देखि दशा सो रघुवर समझे, भ्रात भगिनि के नेह नहाई।

(७१४)

राम रसिक कुँअरहिं हिय लाये।
चेत कराय चले संग लीन्हे, ह्वै मन मोदित बहुरि नहाये।
शुचि संध्या निर्वाह नवल दोउ, कुंज श्रृंगार श्रृंगार सजाये।
हर्षण सिद्धि सुफल रस लाई, पिये मधुर रस रसे सुहाये।
हँसि हँसाय रघुवर प्रिय श्यालहिं, सरहज के गरुये गुण गाये।

(७१५)

केलि कुंज गवने रस छाके।
कोटि काम कमनीय लजाये, श्याम गौर बपु बुधिवर बाँके।
चौसर चारु चपलचित चोरत, क्रीड़न चले परस्पर ताके।
पासा तीन चार रंग गोटी, घर चौरासी यंत्र सजाके।
सिद्धि सुभग सिखवति लखि दोहुन, चाल चलहु युग बाँधि बनाके।
रसे रसहिं रसिया मधु मुसकत, मोहत मनहिं सखिन टुक झाँके।
सुर प्रसून बरषत बहु नभते, जय जय कहत निशान बजाके।
हर्षण युगल हुलसि हँसि खेलत, हार भई नहिं हरि हरषा के।

(७१६)

बाहर विपिन कबहु तट कमला।
मन भावत करि विविध सवारी, सेवक सखा सहानुज अमला।

जात पथहिं मन मोहत सबके, बाल वृद्ध जड़ चेतन अबला।
पहुँचि तहाँ क्रीड़त कहुँ कन्दुक, चढ़े तुरंगन सब शुचि सबला।
राम जीत श्रीनिधि सुख पावत, श्याल जिते सीता धव धवला।
प्रेम पगे प्रमुदित रस मोऊ, देत सबहिं सुख बहु विधि विमला।
कहुँ कछु कहुँ कछु कर दोउ केली, रंजन करत राज सुत नवला।
हर्षण हर्षि सुमन सुर वरषत, पेखत प्रेम पगे प्रिय प्रबला।

(७१७)

क्रीड़न करि मन मोहन आवत।
गजहिं चढ़े दोउ रसिक सु रसमय, छाजत छत्र चमर मन भावत।
अनुज सखा सब चढ़े तुरंगन, दोउ दल दोहुँ दिशि हँसत हँसावत।
पुर नर-नारि यथा रुचि देखहिं, बरसि सुमन जय जय सब गावत।
राजकिशोर राज मग राजहिं, मन मोहत मद मदन मिटावत।
पूरि प्रकाश परम पथ पाहीं, जन जिय जग जग ज्योति जगावत।
मधुर मधुर बतरात परस्पर, निरखि निरखि बलि बलि दोउ जावत।
हर्षण भू आकाश महानँद, सुर सेवत सुमनन संग धावत।

(७१८)

जनक सुनयनहिं जाइ मिले दोउ।
रघुकुल निमिकुल नवल सुनन्दन, प्यार पाइ सुख सरस सने सोउ।
आशिष पाइ पूँछि पुनि दोऊ, चले चन्द्रकीरति रस रस चोउ।
हर्षण कुँअर गये सिय सदनहिं, सिद्धि सदन रघुराज रसहिं मोउ।
प्रेम पुनीत की मूर्ति युगल वर, करत प्रशंसा जय कहि सब कोउ।

(७१९)

मिले मुदित भल भगिनि भाई।
प्रीति पुनीत पुरातन दुहुँ की, कवन कहै मन वाक् न जाई।
करि दुलार लक्ष्मीनिधि दीन्हे, पुष्प माल वर वस्तु बड़ाई।
हर्षण कछुक पवाय प्यारि पुनि, पूँछि भवन गे तेहिं चित लाई।
अनुजा सुरति भुलावति ज्ञानहिं, डगमग पैर परत भुँई ठाई।

(७२०)

सिद्धि सदन उत श्याम सिधाये।
कुँअरि प्रतीक्षा करति रहीं तहँ, आवन अपलक आँख दसाये।
देखि उठी आरति कर भेंटी, दीन्ह सिंहासन सुभग सजाये।
हर्षण पूजि यथा विधि हरषित, जनक सुवन तेहि अवसर आये।
देखत राम प्रहर्षि मनहिं मन, श्याल-विरद-दुख दूर भगाये।

(७२१)

राम मिले सिधि सहित कुँअर कँह।
तनिक वियोग सहत नहिं सोऊ, लखि कुँअरहि भे मुदित हृदय महँ।
कुँअरहु निरखि श्याम सुख पायो, सिद्धि सविधि सत्कार कियो तहँ।
हर्षण श्याल भाम रसि बैठे, कुँअरि प्रिया किय आरति सुख सह।
पान गंध-स्त्रग दै सुठि सेवी, नेह नदी को धार भवहु बह।

(७२२)

बैठि मदन मद मर्दन मोहन।
श्याम गौर मणि मरकत सुवरण, अंश धरे भुज करषत जोहन।

सखि गण छत्र चमर सिर ढारहिं, रसमय रसिक रसहिं रस दोहन।
सिद्धि कुँअरि गावति रस बिखरति, हरषण चखत युगल सुठि सोहन।
नीकी लगत बीण झनकारी, मधुर अँगुलिया फेरनि छोहन।

(७२३)

अभिनय भवन रसहिं रस बरषै।
सिद्धि स्वयोग शक्ति जहँ प्रकटी, अभिनय सेव करति चित कर्षै।
लीला ललित लखावति लोनी, सरस सुखद बहु विधि हिय हरषै।
रसे रसिक दोउ सुभग सलोने, श्याल भाम लखि लखि सुख सरसैं।
कहुँ कहुँ कुअँरहु सिद्धि साथ लै, केलि करत अभिनय रस झरसैं।
रामहुँ रसहिं रसे कहुँ कबहूँ, करत किलोलहिं कमला तरसैं।
नृत्य गान गति भाव मधुरिमा, वीणा वेणु नाद्र दिवि दरसैं।
सरहज श्याल रास रस भीजे, हर्षण सेवत श्यामहि परसै।

(७२४)

अभिनय रस रासहिं रस रास्यो।
श्याल भाम शुचि सरहज सिद्धि, सहित सखिन सुख अनुपम आस्यौ।
आनँद सिन्धु अशेष उमड़ि तहँ, रसाद्वैति रस रूप प्रकाश्यौ।
हर्षण सुमन सुरन बरसावत, हनहिं निशान जयति जय भास्यौ।
सो समाज सो शोभा सुख को, कवनेहु काल होत नहिं ह्रास्यौ।

(७२५)

व्यारू बहुरि किये मन भावति।
परसि परसि सुख सनी कुँअरि प्रिय, प्रेम पगी मुसकाइ जिमावति।

युगल कुमार सुरस सुठि स्वादी, अँचवन लै प्रिय पानहिं पावति।
हर्षण सिद्धि शयन के कुंजहिं, चली लिवाय सरसि सरसावति।
सखी सहचरी साथ में सोहहिं, गीत मधुरिमा हिय हुलसावति।

(७२६)

शयन कुंज सोहहिं सुख सरसे।
कुँअरि कुँआर मुदित रघुनन्दन, लखि लखि यक एकहिं चित करषे।
परमैकान्तिक बात मधुर मधु, सने सनेह करत हिय हर्षे।
हर्षण हरषि श्याल शुचि सरहज, सेज सुहाये श्याम सुघर से।
अनुपम अकथ शयन की झाँकी, अनुभव गम्य प्रीति रस पर्शे।

(७२७)

सेज सुभग सोवत रस रासे।
राम रसिक रस रूप मनोहर, मोहत मनहिं पै प्रेम पियासे।
कुँअर कुँअरि प्रिय पाँव पलोटत, मधुर मधुर सखि गीत सुभासे।
प्रेम पगे लक्ष्मीनिधि दम्पति, राम चरण धरि माथ दियासे।
अति अतुराय राम रघुनन्दन, दुहुँन उठाय लगाय जियासे।
सिधि श्यालहिं तिन मूर्ति दिखाई, हृदय कमल कमनीय कियासे।
दूनहु आनँद सिन्धु समाने, भूले भान अपान धियासे।
हर्षण हर्षि राम पौढ़ाये, श्यालहिं सुभग सुसेज सियासे।

(७२८)

सोये युगल रसिक रस माहीं।
रसमय सेज रसहिं मय सोवन, रसमय सुखद दोउ दरशाहीं।

कुँअर करहिं करि कल उपवरहन, मुख पर मुख रखि राम सोहाहीं।
प्रीति प्रवीण रसहिं रस सागर, सो सुख कहन श्रुतिहुँ गति नाहीं।
नव नव युगल प्रेम लखि सिद्धिहुँ, त्रिकरण बलि बलि सेव तहाहीं।
पूर्ण मनोरथ भइ कृत कृत्या, पति प्रभु सुखहिं प्रयोजन ताहीं।
आलस भरे निरखि करि आरति, उर धरि सिय सेवा सरसाहीं।
हर्षण हृदय हेरि तू या रस, कस नहिं चखत भूलि भव काहीं।

(७२९)

सिद्धि सिया सँग सँग करि ब्यारी।
प्रीति प्रतीति–सुरीति परस्पर, कहि कहि होती अतिहिं सुखारी।
पुनि रस रूप ननँद भलि भाभी, सोई सेज सुभग सुख कारी।
हर्षण सिया सिद्धि की प्रीती, कौन कहे रसमय रस सारी।
मन बुधि वाणी पार अगम्या, शारद शेष श्रुतिहुँ नहीं गा री।

(७३०)

यहि विधि दम्पति कुँवर कुँआरी।
सेवत सीताराम सुरस सनि, अष्टयाम अमृत अविकारी।
जेहि विधि रहैं प्रसन्न सियावर, सोइ करहिं मन मोद महाँरी।
राम सुखहिं दोउ निज सुख जाने, तिन इच्छहिं निज चाह विचारी।
आपन स्वत्व सबहिं विधि खोये, महाभाव रस रसे सदारी।
रामहुँ श्याल सु सरहज राते, रहहिं रसे रसमय रसवारी।
सिद्धि सदन तजि पगहु न गवनत, जनक सुवन सँग करत विहारी।
हर्षण सिया कृपा का कहिये, उर बिच भाभी भ्रात पधारी।

(७३१)

दोहा:- वर्षा शरद वसन्त वर, प्रीतम ऋतु अनुकूल।
उत्सव बारह मास करि, सेवति सिधि सुख मूल।।
कहुँ झूलन कहुँ रास रचि, कहुँ विवाह कहुँ फाग।
जन्मोत्सव जलकेलि कहुँ, रचति सिद्धि बड़ भाग।।
राम सियहिं सुख दाइनी, केलि कला दर्शाय।
रिझवति आपुहिं वारि के, परम प्रेम सरसाय।।
सारी सरहज सार के, प्रीति विवश रसराज।
श्वसुर पुरी सानँद बसत, सहित सिया रघुराज।।
बसत अयोध्या धाम जब, तबहूँ पागे प्रेम।
राम सियहिं बुलवास सिधि, उत्सव करति सनेम।।

(७३२)

देखो सुहावन श्रावण आयो रे, हरि हरि सारी भूमि को लायो रे।
बड़ि बड़ि बूँदन मेघवा वर्षत, गरजि तरति विद्युत नभ दर्शत,
जल की धार बहाय मही पै, सरित सरोवर सब उमड़यो रे।
दादुर मोर पपीहा बोलत, कुहकत कोयल मधु को घोलत,
पवन बहत पुरवइया सजनी, झूलन को शुचि समय सुहायो रे।
सिद्धि कुँअरि झूलन सजवाई, तेहि पै सियरामहिं बैठाई,
सखियन सहित करि आरति हर्षण, नृत्य गीत वर वाद्यहिं छायो रे।

(७३३)

झुलावति सिद्धि दोउ को हिंडोर।
जनक नन्दनी दशरथ नन्दन, नव नागरि नागर रस बोर।
मन्द मुसुकि मन हरत सलोने, मारि मारि बड़ दृगन की कोर।
झूलत प्रेम पगे रस वर्षत, कहर करत सरहज चित चोर।
श्याम गौर घन विद्युत झाँकी, झलमल झलमल झलकति जोर।
देखि देखि मैथिल नव नवला, सारी सरहज प्रेम विभोर।
नृत्य गान वर वाद्य सुखद करि, रिझवहिं नृपति किशोरि किंशोर।
हर्षण श्यामा श्याम प्रहर्षत, नेह नगर को नेह अथोर।

(७३४)

रहे झूल झमकि झमकि दोउ पिय प्यारी।
रस में रसे राजै अहो रसवारी।
क्रीट मुकुट सिया ओर, लटकि रह्यो छबि अथोर, अलक अरुझि,
अतरबोर, कारी कारी घुघुरारी।
कानन कुंडल किलोल, झाईं झूलति कपोल, मनहु मीन सरहिं डोल,
सोहै सत सुखकारी।
चितवनि चित को चुराय, रहे लोचन लोभाय, मन्द मंन्द मुख मुसकाय,
लीन्हे हिय हिय हारी।
अधर अरुण अमिय हाय, को न चहै पियन पाय, धन्य सिया सुखहिं
छाय, पीवैं मधु मधुकारी।

हुलकनि पुलकनि विहार, झमकनि झूलनि निहार, सिद्धि दई सब बिसार,
नैनों ते रस झारी।
बाजै मुरली मृदंग, धा धा किट धा सुढंग, उठै संगीती तरंग,
नाचै नव नव नारि।
आनन्द सिन्धुहि समाय, हर्षण हियहूँ हेराय, सिद्धि सदन रसहिं छाय,
झूलैं झुकि पिय प्यारी।

(७३५)

जन मनरंजन भव भय भंजन झूलत चाये, भाये हो।
सिय संग शोभित श्याम शत शशि, लजत मदन महान है।
अंग अंग छहरति छाय छिटकति, छवि सुखद सुख खान है॥
शिर अलक अँतरन भींज कारी, कलित कुँचित राजती।
शत भानु भहरत क्रीट मुकुटहु, खौर केशर भ्राजती॥
मसि बिन्दु लाये।
शुचि श्रवण कुण्डल लोल झाई, कल कपोलनि में परै।
जनु मीन मदनी अमिय सर में, कर किलोलहिं हिय हरै॥
दृग दोउ कज्जल रेख रंजित, कान लौं बड़रे अहा।
धनु काम भृकुटी सोह सुखमय, भक्त सुख प्रद सब कहा॥
रस उपजाये।
हिय हार कटि पै फवत किंकिणि, पगनि नूपुर अति लसै।
नख शीश भूषण वसन भूषित, जाय चित जहँ तहँ फसै॥
श्री सिद्धि महलनि श्वसुर पुर में, सारि सरहज रस बही।

झुकि झुकि झमकि झूलन झुलावहिं, राम सिय सुख पावहीं।।
आनँद छाये।
श्री सिद्धि वीणा लै करहिं निज, स्वर सु पंचम प्रेम ते।
रँगि राग मलार सु मेघ गावति, नचहिं अलिगन नेम ते।।
संगीत नृत्य सुवाद्य रस झर, पूरि आनँद तहँ रहयो।
सब भूलि भानहिं लखत श्यामहिं, हर्ष लोचन फल लह्यो।।
जन्म फल पाये।

(७३६)

अरे मन मोहना लखै सिय ओर।
अति सुकुमारि मधुर रस पूरी, झमकति झुलति हिंडोर।।
पुरुषन को भय नेक न आवति, होवत हृदय कठोर।
हर्षण डरति सिय सुनु लालन, झूलन जनि झकझोर।।

(७३७)

रसिक दोउ झूलत रसहिं झरे।
सिद्धि सदन स्वच्छन्द छहर छबि, हरित हिंडोर हरे।।
सुख सुषुमा श्रृंगार महोदधि, लहरत सुखहिं भरे।।
नख शिख भूषण वसन सम्हारे, केशर तिलक करे।।
चितवनि चारु नयन कजरारे, चोरत चित्त अरे।।
मन्द मन्द मुसुकनि मन मोहत, धीरज धी न धरे।।
नृत्य गीत वर वाद्य ते आलियाँ, रिझवहिं नेह खरे।।
हर्षण लोभी लोचन लखि लखि, चाहत लगन गरे।।

(७३८)

झूला झूलो मेरे ननदोई लला, झुकि झोंके चला।
प्रेम पगे लै मोरे ननन्दहिं, सुख सुषुमा श्रृंगार भला॥
विहँसत अधर अमिय मुखगागर, रसिकन नित्य पिलाय पला॥
तिरछि तकनि चतुर चित चोरनि, देखहिं दृग भरि दृगन कला॥
झूलनि झमकनि झुकनि माधुरी, झकझोरनि सुख फलहिं फला॥
अरुझे युगल परस्पर निरखत, वितरि अनन्द अनूप थला॥
बने रहो नित नयनन तारे, श्रावन सदा भगाय बला॥
हर्षण भाग कवी को वरणी, सेइहौं सुख सनि चरण तला॥

(७३९)

झूलत कमला तीरे, रसिक रस बोरे।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, पिय प्यारी सुख सीरे॥
उमड़ि घुमड़ि घन घहरत कारे, चपला चमकि अधीरे॥
पिउ कह पपिहा कुहकति कोयल, नचत मोर बन भीरे॥
चहुँ दिशि सुखद हरीतिमा छाई, सरिता बहुत बढ़ी रे॥
झूलन कुंज सुखद सब कालहिं, छिद्र न नेक लही रे॥
सिद्धि कुअरि सह सखिन झुलावति, नृत्य गीत सुख दी रे॥
हर्षण सो सुख सुमिरि सुमिरि के, न्हाय नयन के नीरे॥

(७४०)

मोहति मनहि हिडोर हलनिया।
श्याल भाम श्रीनिधि रघुवर की, प्रेम पगी सुख सनी सोहनिया॥

मुसुकि मुसुकि बतरात परस्पर, अरुझि रहे दोउ लाल लोभनिया॥
हुलकनि पुलकनि झमकि झूलना, रसहिं रसी मन मोद बढ़निया॥
अलिगन नृत्यहिं गावहिं मधुरे, वाद्य बजत गंधर्व लजनिया॥
कोटि कोटि कन्दर्प दर्प हर, मोहि रहे मन मधुर मोहनिया॥
भाभी ननंद सिद्धि-सिय देखहिं, बैठि झरोखन झाँकि झुलनिया॥
हर्षण दोउ हुलसि हिय हर्षहिं, वर्णत छवि-गुण-प्रेम-पुरनिया॥

(७४१)

राज कुँअर रस रूप निहार अहो री।
मिथिला अवध नृपति के वारे, कोटि काम मद गार॥
झुलत हिंडोर दोउ सुख साने, श्याम गौर सुख सार॥
प्रीति पुनीत परस्पर प्यारी, वरणि कहै को पार॥
एक एक मन हरत मुसुकि के, चितवनि जादू डार॥
अरुझि रहे भुज अंश दिये दोउ, करि कपोल एक कार॥
देखि देखि हिय हर्षण हर्षहिं, सिद्धि-सिया सुकुमार॥
युग युग जिऔ कहैं एक साथहिं, रहैं भाम अरु सार॥

(७४२)

झूलति सिधि संग सिया हिंडोर।
प्रीति पगी सुख सनी रसहिं रसि, भाभी ननंद विभोर॥
दोउ सर्वाङ्ग सुन्दरी अनुपम, रती रमा सब थोर॥
नख शिख भूषण वसन सुसज्जित, अँग अँग अतिहिं अँजोर॥
शारद शत शशि जित मुख आभा, अमृतमय रस बोर॥

चितवनि मुसुकनि मधुर माधुरी, किमि कह वाणीं बौर॥
नृत्य गीत वर वाद्य ते रिझवहिं, अलिगन हृदय विलोर॥
हर्षण दोउ की झमकि झुलनियाँ, सखियन के चित चोर॥

(७४३)

झूलति सिया सखिन के संग।
अजिर–कदम की डार हिंडोरा, सुखप्रद पर्‍यो सुढंग॥
चन्द्रकलादि अली बहु झूलैं, झमकि झमकि झुकि अंग॥
निज निज झूलन की गति देखी, मन महँ बढ़त उमंग॥
मेघ मलार श्रावणो गावहिं, पंचम स्वर एक संग॥
बजत सितार सारंगी मंजीरा, मुरली मुरज मृदंग॥
नृत्य नृत्य भल भाव प्रदर्शहिं, आनँद वर्धि अभंग॥
हर्षण हर्षि सुमन सुर रवनी, रँगहिं सिया के रंग॥

(७४४)

जानि शरद सुख दायिनी, सिद्धि हृदय विचार।
शरदोत्सव करि सिय साजनहिं, सेवहु साज सम्हार॥
रासकुँज रमणीय रचि, योग प्रभाव न थोर।
निज सखियन लै सिय राम कहँ, पधराई सुख बोर॥
पूजि सविधि वर विनय किय, पिय प्यारी रस राज।
रहसि रास सुख वितरि प्रभु, करहिं मोहिं कृत काज॥
सरहज की अभिलाष लखि, रास रच्यो सिय नाह।
आनँद अंबुधि बोर दिय, केलि कला रस राह॥

(७४५)

नटत राम नटवर नागरिया।
सहित सिया भुज अंशनि धारे, जगजगात छवि छहर छहरिया।।
मुसुकि मुसुकि वर वेणु बजावत, उमगेउ आनँद सिन्धु लहरिया।
मधु मधुरे कहुँ राग अलापत, गुण गावत सिय के सुख सरिया।।
नृत्य गीत वर वाद्य मधुरिमा, अगम अगाध अनूप अपरिया।
वरषि प्रसून सुरन सुख फूले, वाद्य बजावत बहत बहरिया।।
सखि सब सरसि सुखहिं सुख साँनति, लखि मोहहिं मन हर मन हरिया।
सखि राम हर्षण रस राच्यो, सिद्धि कुँअरि के अनुप अगरिया।।

(७४६)

लाड़िलि लाल बसे मोरे मन में।
रसमय अली रसहिं मय मंडल, रमेउ रास रसिया जन जन में।।
परमानन्द बहाय सहज सुख, नृत्यत गावत सिद्धि सदन में।
कोटि काम छबि छहरत तन ते, मुसकत मधुर मनोहर पन में।।
नयन रसीले रस वर्षावत, तकि तकि तिरछे सोह अलिन में।
सुर नर नाग यक्ष की कन्या, गन्धर्वी गति लेहि नचन में।।
सुर प्रसून प्रमुदित झरि लावत, हनि निशान जय वदत वदन में।
हर्षण जो सुख सिद्धि सदन शुचि, सो सुख स्वप्न नहीं त्रिभुवन में।।

(७४७)

सखि लखु श्यामा श्याम की जोरी।
दशरथ नन्दन जनक नन्दिनी, छवि श्रृँगार मनहुँ इक ठौरी।।

वेणु बजावति उर उमगावति, सिद्धि सदन सरसति सुख सोरी।
नटत नवल नव अलिगण मध्ये, रास रसे रस ही रस बोरी॥
आनँद वरषि सहज सुख सखियन, वितरति अमृत भौमा को री।
मोहति मनहिं मधुर मन मोहनि, कोटि काम रति को मद मोरी॥
रसिया रसिक राय रघुनन्दन, धनि रसिकनि रस रूप किशोरी।
हर्षण सुमिरत सुलभ सबहिं कहँ, कृपा कोर रस सिन्धु हिलोरी॥

(७४८)

अभिनय रस रची सिधि सजनी।
योग प्रभाव परम विस्तारी, रास साज सब प्रगटेसि भवनी॥
सीताराम स्वरूप सुखद करि, भई सुखी सत्यहिं गुनि फवनी।
रामानन्द रासि रस बोरी, राम रमायो सिय सह छवनी॥
अलिगन अमित अनंद अमाई, सेई श्याम सियहिं गति गवनी।
कंकण किंकिनि पायल बाजत, वीणा वेणु वाद्य बहु लवनी॥
नृत्य गीत गति कला अथोरी, भाव भंगिमा भव दुख दवनी।
हर्षण आनँद सिन्धु समाये, वर्णन करै कहहु कवि कवनी॥

(७४९)

आजु अली अरुझाने नैना।
मोहत मधुर मुरलि मुख दीन्हे, रसिया राम रमैना॥
मोर नृत्य नृत्यत सिधि सदनहिं, सखियन संग सचैना।
कहर करत कमनीय कृत्य करि, बोलि मधुर मधु बैना॥

कोटि काम उपमा अति ऊनी, श्याम सुभग छवि छयना।
चंचल चित्त चितय चित चोरत, लोचन ललित लुभैना॥
मन्द मन्द मुसकत मन मोहन, मोहि लियो मधु ऐना।
हर्षण लखि दुख द्वैत भगायो, रसे रहत जित मैना॥

(७५०)

रसिया राम आजु रस बरषै।
अलिगन प्रेम पगी तेहिं पीवैं, सिद्धि सदन सुख सरसै॥
रास रसे मंडल बिच राजत, सहित सिया चित करषै।
मधुर मधुर मृदु तान अलापत, मुखहिं मधुरिमा तरसै॥
नृत्य कला नैपुण्य साँवरो, त्रिभुवन एकहिं दरसै।
कोटि मार मद मर्दन प्यारो, छवि छहराय कहरषै॥
देव दरश लहि सुमन सुवर्षत, जय जय कहत अधर से।
हर्षण सो सुख अकथ अलौकिक, महिमा महा सुघर सै॥

(७५१)

नटवर नागर नवल अली री।
नटत नेह नमि नवल निकुंजे, शोभि रहीं सिय साथ भली री॥
मधुर त्रिभंग मदन मन मोहन, रसद रूप रसि छयल छली री।
रास रसे रस वितरत सब कहँ, मनहुँ भ्रमर कहँ कमल कली री॥
वेणु बजाय बनाय विभोरी, अधर अरुणिमा अमिय थली री।
चरहिं अचर अचरहिं चर कीन्हेव, आनँद अमित बहाय गली री॥

सिद्धि कुँअरि की भाग विभूती, प्रगट परी प्रभु प्रेम पली री।
हर्षण हियहिं हुलसि हर्षाये, सुमिरि सुमिरि दुख दोष दली री॥

(७५२)

मोहि लियो मन मोरा, सिया के सुखद सजन ने।
शारद शशि शत विजित वरानन, विधुकर निकर हास हरषायन,
हियहि हरेउ रस बोरा। सिया के सुखद सदन ने॥
मदन चाप जित भृकुटि अनूपी, लसत नासिका मणि रस रूपी,
पियत अधर हलकोरा॥ सिया के.॥
खंजन मंजु तिरीछे नयनन, बड़रे रसद रसीले सयनन,
करत बशी नृप छोरा॥ सिया के.॥
कल कपोल कमनीय अपारो, श्रवण सुभग कुंडल छवि वारो,
युगल मीन किलकोरा॥ सिया के.॥
अधर मधुर मधुमय अति लोने, भासत ललित लाल ललकोने,
अमृत अनुप अथोरा॥ सिया के.॥
चारु चिबुक दर ग्रीव सुशोभित, अंग अंग आभा मन लोभित,
रसिया राम किशोरा॥ सिया के.॥
जनक सुता कर धरे सु नर्तत, कलित कंठ कल गीतहिं वर्तत,
लखत त्रिदेव विभोरा॥ सिया के.॥
पद नूपुर रव रंजित आशा, उचरत ताल प्रमान प्रभाषा,
रस वर्षै चहुँ ओरा॥ सिया के.॥

हेरू अली नटवर वर वेषा, चित्त चमत्कृत सोह अशेषा,
केलि कला सहजोरा।। सिया के.।।
अलिगन भाग कहै को पारी, धरि भुज अंश जिन्हैं रसवारी,
चूमि मुखहिं चित चोरा।। सिया के.।।
हर्षण सो सुख सुमिरि सुभायन, रामहिं रमे सुखहिं सरसायन,
बनि गे चन्द्र चकोरा।। सिया के.।।

(७५३)

राम रसिक नट नृत्यति नूपुर, रमति मनो में रव रसकारम्।
विस्तृत भूषण वसन विव्यस्तं, श्रमकण सुमुख सरोज उदारम्।।
अधर मधुर मधु वादित वेणु, वर्षित विबुध प्रमोद प्रसूनम्।
जय जय मधुर मनोहर नादं, हर्षित हृदय अनूप अनूनम्।।
कल कपोल कुण्डल प्रतिबिंबित, मिथुन मकर कमनीय किलोलम्।
मन्द मन्द मधुमय मृदु हासं, नयन सरोज विमोह विलोलम्।।
चंचल चन्द्रमुखी मुख चुम्बित, गुणातीत गांधर्व सुवेषम्।
हर्षण हृदय हार कमनीयं, सिद्धि सद्म सुख सार अशेषम्।।

(७५४)

श्याल भाम दोउ अटन आरोहे।
दीपावली दिव्य दृग देखत, सुखहिं सने मन मोहे।।
स्वर्ण सुमेर सदन भल भावत, दीप भानु उइ ओहे।
डगर डगर प्रति नवल नगर में, पुंज प्रकाश सुसोहे।।

कमला तट कमनीय जगर जग, दीप पंक्ति जब जोहे।
लगत मनहु लख तन समुदाई, तटहिं बैठि रस दोहे॥
दशरथ नन्दन निमिकुल नन्दन, चहुँ दिशि देखत छोहे।
हर्षण मिथिला आनँद रस भर, कतहुँ न मिलत टटोहे॥

(७५५)

सिद्धि कुँअरि सहजहिं रस वारी।
अगहन मास शुक्ल तिथि पंचमि, जान जियहिं सुख सारी॥
सीता राम विवाह को उत्सव, रचि के सदन मझारी।
नृत्य वाद्य संगीत सुधा ते, दीन सबहिं सुख भारी॥
ऋषि मुनि संत भये तेहिं पूजित, भाव भले हिय धारी।
निज ननदोई ननद के हेतहिं, दीन्ह दान सुखकारी॥
सिय रघुवीरहिं वस्त्रा भूषण, दै पुनि सर्वस वारी।
यह विधि ते प्रति संबत हर्षण, आनँद मचै अपारी॥

(७५६)

सखि अवधेश कुमार न आये फागुन आय गयो।
आवन कहे माघ के मध्यहिं, संग सखा अरु अनुज लयो॥
खेलन फाग भरे मन मोदहिं, सारी सरहज साथ चयो।
श्वसुर पुरी रहि सोउ सुख सानै, पै कछु कारण कहा कयो॥
जस जस फागुन के दिन बीतत, विरह वह्नि तस ताप तयो।
राम रसिक रघुराज बिना सब, सुख को सोना माटी भयो॥

बीती रुदत बसन्त ऋतु रस, जो नहिं आय के दर्श दयो।
हर्षण गये बुलावन तेऊ, अबलौं अवध ते नाहिं अयो॥

(७५७)

रसिया रसिकिनि को रस लेत।
विपिन प्रमोद सरोजा तट पै, करति केलि श्रुति सेत॥
जननि जनक अरु अनुज सखा सब, प्राणन प्रिय सुख देत।
आनँद धाम बसत मन मोहन, हर्ष सुधिहिं तजि चेत॥

(७५८)

अलि आय गयो फागुनवाँ, आये न सिय के सजनवाँ।
आवन कहे न आये अब लौं, निमिष जात मोहि कल्प के सम लौं,
बहैं वारि नयननवाँ॥
प्रीति की रीति कहौं केहि भाँति, एकाङ्गी बिन स्वार्थ प्रभाती,
विरह बढ़ै छन छन माँ॥
श्याम स्वरूप सुहावन सहजहिं, नख शिख भूषण वसन विराजहिं,
कोटि काम छवि तनमा॥
चितवनि चारु चतुर चित चोरनि, मुसुकनि मधुरि मधुहि मधु घोरनि,
मोहत मनहिं मोहनमा॥
बोलनि विहरनि चलनि चातुरी, बैठनि उठनि प्रमोद दातरी,
सुखप्रद सबहिं सोहनमा॥
छन छन सुरति बढावति पीरा, चाहत दृग देखिहहिं कब बीरा,
राम रसिक जिय जनवाँ॥

हर्षण सिद्धि विरह रस बोरी, कसकत हृदय सखिन सन भोरी,
बात करति गुण गनवाँ॥

(७५९)

कब ऐहैं सिय सैंया कहो मोरी बीर।
दरश दिखाय सुखहिं सरसईहै, नयन अतिथि चारों भैया॥
सुन्दर बदन कमल दल लोचन, श्याम गौर छवि छैया।
अगहन पूनम गये इहाँ ते, दिय दुइ मास बितैया॥
नहिं आये अबलौं रघुनन्दन, विरह बढ़ेव दुख दैया।
रहि न जात बिन देखे निमिखहुँ, कहर कहर जिय जैया॥
फागुन आस रही मन मोरे, अइहैं श्री रघुरैया॥
हर्षण भाग जगी मम सजनी, प्रियतम पर्शहिं पैया॥

(७६०)

सँदेशो कोउ कहत न आय।
ऋषि मुनि संत बटोही वाणिक, अपने कार्य स्वभाय॥
समय समय सब आवत जावत, देहिं अवध कुशलाय।
सोऊ नहिं आये यहि कालहिं, सबहीं गये छिपाय॥
आवागवन रुकत जग जैसे, वर्षा ऋतु को पाय।
सुनियत सिय पति बोलि पठाये, गुनि विलम्ब निमिराय॥
गये बुलावन सोउ नहिं लौटे, रहि रहि जिय अकुलाय।
हर्षण हिय के हरण हेरि के, कब रहिहैं पुलकाय॥

(७६१)

सगुन बतावै बोल के काक।
दूध भात की दोनी दैहों, कनक मढ़ैहौं नाक॥
आवत होहिं अवध उजियारे, कहहु सत्य सत वाक।
मंगल भवन लखत नित मंगल, सिय सह सुठि सुख भाक॥
कहै कुशल कौशल किशोर की, दै संकेतहिं शाक।
प्रेमी पगी इमि मैथिल नारी, विरही रँग में छाक॥
विविध भाँति के सगुन उठावहिं, प्रियतम प्रेम में पाक।
हर्षण दशा कहै को तिनकी, भूली भव गुनि खाक॥

(७६२)

सिया रमण में रमि रहि अहनिशि, निमिपुर की नव नारियाँ हो।
अविचल चित्ता मेटि उपाधी, सहज लगी तिन्ह भाव समाधी,
सिगरी सुख की सारियाँ हो॥
सोवत जागत उठत औ बैठत, छींक जम्हात औ आलस ऐंठत,
न्हात खात गृह द्वारियाँ हो।
विविध भाँति गृह काज सम्हारत, पुत्र पुत्रिका अंक दुलारत,
राम रटहिं सब वारियाँ हो॥
जित देखहिं तित रामहिं रामा, जगत भयो सब श्यामहिं श्यामा,
बहत दृगन जल धारियाँ हो।
रूप शील–गुण प्रभु को वर्णहिं, प्रेम विभोर भूलि तन करणहिं,
सात्विक चिन्ह चिन्हारियाँ हो॥

चितवनि मुसुकनि चित की चोरनि, बैठतिबोलनि उठनि मुखमोरनि,
सुधि करि सबहिं बिसारियाँ हो।।
चितवत पंथ रहैं दिन राती, कोउ कहै प्रिय की कुशलाती,
हर्षणहू हिय हारियाँ हो।।

(७६३)

अटन चढ़ि चितवैं सांझ सबेरे।
आवत होइहैं प्राण के प्रीतम, अवशहिं या मग तेरे।।
निरखैं खड़ी राम की गलियाँ, बहत वारि दृग से रे।
वावलि बनी चकित चित विरही, मनहु गई निधि हेरे।।
कहुँ बाहर कहूँ भीतर जावै, नीच ऊँच गृह केरे।
श्वास उसास छनहिं छन लेवै, दुखद दशा तन घेरे।।
रहि न जाय पै रहहिं दरश हित, आत्म रमण के प्रेरे।
हर्षण यहि विधि मिथिला नागरि, बसै प्रेम के खेरे।।

(७६४)

सखि सिय नाथ न आये, किते दिन बीते।
सुन्दर श्याम किशोर वयस के, कोटि काम छवि छाये।।
शत शत शारद शशि जित आनन, अधरन अमिय चुआये।
मधुर मधुर बतरानि पुष्प झरि, सुठि सुगन्ध बिखराये।।
पकरि पाणि निज नयन सयन ते, मोहिं कहँ लाल रिझाये।
चितवनि मुसुकनि सुरति हृदय बिच, छन छन कहर मचाये।।

जात निमिष इक कल्प लौं सजनी, विहर ब्याधि बढ़ि काये।
हर्षण दर्शन आश जियहुँ जग, तेहिं मग दृगन दसाये॥

(७६५)

ललन बिनु कल न परति दिन रैन।
छन भीतर छन बाहर जावहिं, मिलत न चित को चैन॥
भूख भगी नयनन नहिं निंदिया, राग रंग दुख दैन।
आह भरत निशि वासर बीतत, वारि बहै बहु नैन॥
स्मृति खोय बनी मैं बावरि, भावत नहिं अब ऐन।
दशरथ कुँअर हृदय लै सजनी, अवध वसत सिय लैन॥
मिथिला वसत दशा यह मोरी, लखहु सबै जस हैन।
हर्षण सुमिरि सुमिरि सिय साजन, बोलि न आवत बैन॥

(७६६)

आली कहे तू खेलिहौ केहि सँग होरी, फागुन में रस बोरी।
रंग रसिक रघुवीर न आये, रहे दिवस अब थोरी॥
राज कुँअर बिनु नेक न भावति, मिथिला पुर की खोरी।
देखिहौं कबै लिये पिचकारी, खेलत चित को चोरी॥
मसलि गुलाल अबीर की मारी, करिहैं बहु बर जोरी।
तिनहिं सुखी करि सुख में सनि हैं, सारी सरहज भोरी॥
परमानन्द पूरि पुर मिथिला, सिय पिय के सुख सोरी।
हर्षण लगे अंग शुभ फरकन, लगीं विचारन गोरी॥

(७६७)

सजनी राम रसिक अब ऐहैं।
शुभ प्रद सगुन दिखात सबहिं को, स्वप्न सुखद चित चैहैं॥
फरकत अंग देखु सुख दायक, दिव्य दरश सब पैहैं।
घर-बन-पुर-सरि-सर दश दिक, पंच भूत मधुमई हैं॥
मन प्रसन्न चित चाव अधिक तम, प्रियतम नेह नहै हैं।
श्याम स्वरूप निरखि जड़ चेतन, निज निज नयन जुड़इहैं॥
राज भवन आनन्द कहैं को, सुख के सिन्धु समइहैं।
हर्षण होरी उत्सव नीको, पुर नर नारि मचइहैं॥

(७६८)

आय गये रघुरइया हो मिथिला बजत बधइया।
घर घर बन्दनवार पताका, फहरत ध्वज यश छैया॥
मणिन चौक पूरी प्रति द्वारन, कनक कलश मणि मैया॥
हाट बाट चौराह सजाये, सर्वस सबहिं लुटैया॥
आरति करहिं मगहिं नर नारी, पंच धुनी सुख दैया॥
जनक पुरी सोहति सब भाँतिहि, लोचन लाभ को पैया॥
सिय के सहित राम लखि सिगरे, सुख के सिन्धु समैया॥
हर्षण राज भवन में बसिके, बितरे सुख सब भैया॥

(७६९)

सखि सिद्धि सदन सुख बोरी, क्या मची मजे की होरी।
लखु एक ओर रघुवीरा, लै अनुज सखा सुख सीरा॥

पुनि सारी सरहज जोरी, मिलि भई सबै इक ओरी।। क्या.।।
सब गावहिं राग रसाला, बज वीणा वेणु कर ताला,
लै मसलहिं मुख महँ रोरी, पुनि मारि अबीर झँझोरी।। क्या.।।
हर्षहिं रँग भरि पिचकारी, हर्षहिं हिय दोउ दल भारी,
कोउ लपटि झपटि बरजोरी, काहुहि रंगनि दह बोरी ।। क्या.।।
कोउ उछली कुँदि सुख साने, धनि फागुन भाव भुलाने,
अत्यानँद चित को चोरी, हर्षण भाग कहै को री।। क्या.।।

(७७०)

देखु सखी मोहि अवध बिहारी, तकि तकि मारत भरि पिचकारी।
ताकत तिरछे भौंह मरोरी, मन्द मुसुकि कर चित को चोरी।।
लिपटि झपटि करि जोरा जोरी, बाँह मरोर मसल मुख रोरी।
निपट निठुर या रंग को कारो, सकुच न नेक सिया को प्यारो।।
वीर बाँकुरो रंग विहारी, रसिक राय रसिया रिझवारी।
केलि कला नैपुण्य रँगीला, केलि करत कमनीय रसीला।।
लाउ पकरि कोउ रंग रँगीली, हिल मिल के सब सखी रसीली।
नारि बनाय नचावहिं वाको, हर्षण सारी ते सिर ढाको।।

(७७१)

कर में लै पिचकारी अवधवारो हो।
फिरि फिरि चारहु ओर चलाई वर्षै रंग फुहारी।।
चोली चादर चुनरी बोरी, भिजई सरहज सारी।
मारी अबीर कीन्ह अंधियारी, सूझ न हाँथ पसारी।।